सत्यमेव जयते

भारत सरकार
विदेश मंत्रालय

पाचाल

राजभाषा पत्रिका

षष्ठम अंक (वर्ष 2026)

ऑपरेशन सिंदूर

के लिए भारतीय सेना को विशेष धन्यवाद

क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, बरेली

विश्व हिंदी दिवस 2026 पर विदेश मंत्रालय द्वारा पुरस्कार प्राप्त करते हुए

पांचाल

राजभाषा पत्रिका

षष्ठम अंक (वर्ष 2026)

संरक्षक

श्री शैलेन्द्र सिंह
क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी

संपादक

श्री दिनेश सिंह
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

विशेष सहयोग

श्री संदीप शुक्ला
सहायक पासपोर्ट अधिकारी

श्री तुषार पाठक
सहायक अधीक्षक

श्री कौशल सिंह
सहायक अधीक्षक

श्री मिथुन कुमार
वरिष्ठ पासपोर्ट सहायक

भारत सरकार
विदेश मंत्रालय

क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, बरेली

बी.डी.ए. कॉम्प्लेक्स, पुराना पीलीभीत रोड, प्रियदर्शिनी नगर, बरेली - 243122

कीर्तवर्धन सिंह
KIRTI VARDHAN SINGH

पांचाल

षष्ठम अंक (वर्ष 2026)

सत्यमेव जयते

राज्य मंत्री
पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय
एवं विदेश मंत्रालय
भारत सरकार
Minister of State
Environment, Forest & Climate Change
and External Affairs
Government Of India

शुभ संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, बरेली राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में अपने सफल प्रयासों को आगे बढ़ाते हुए राजभाषा पत्रिका 'पांचाल' के छठवें अंक (वर्ष 2025-26) का प्रकाशन करने जा रहा है।

राजभाषा के रूप में हिंदी के प्रचार-प्रसार के महत्त्वपूर्ण उद्देश्य को पूरा करने में पत्रिका प्रकाशन एक प्रशंसनीय पहल है और पत्रिका का नियमित प्रकाशन कार्यालय में हिंदी के प्रति सकारात्मक माहौल का द्योतक होता है। मेरा विश्वास है कि पत्रिका के प्रकाशन से इसके पाठकों में राजभाषा के प्रति रुचि बढ़ेगी तथा पाठकों को हिंदी के साथ ही पासपोर्ट व अन्य विषयों पर हिंदी भाषा में नवीनतम जानकारी मिलेगी, इससे हिंदी का प्रसार होगा।

इस शुभ अवसर पर मैं 'पांचाल' पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी कार्मिकों व सम्पादक मंडल को इस पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

(कीर्तवर्धन सिंह)

MOEF&CC: Akash Wing, Indira Paryavaran Bhawan, Jor Bagh Road New Delhi-110003
Tel: 011-20819418, 20819421 Fax: 011&20819207 E-mail: mos.kvs@gov in
MEA : South Block, New Delhi- 110011 Tel: 011-23011141, 23014070, 23794337 Fax: 011-23011425 E-mail: moskvso@mea.gov.in

पबित्र मार्घेरिटा
Pabitra Margherita

पांचाल

षष्ठम अंक (वर्ष 2026)

सत्यमेव जयते

विदेश एवं वस्त्र राज्य मंत्री
भारत सरकार, नई दिल्ली
Minister of State for
External Affairs and Textiles
Government of India, New Delhi

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, बरेली राजभाषा हिंदी के प्रचार प्रसार में अपने सफल प्रयासों को आगे बढ़ाते हुए राजभाषा पत्रिका पांचाल के छठे अंक (वर्ष 2025-26) का प्रकाशन करने जा रहा है।

हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार के महत्त्वपूर्ण उद्देश्य हेतु पत्रिका प्रकाशन एक प्रशंसनीय पहल है और पत्रिका का नियमित प्रकाशन कार्यालय में हिंदी के प्रति माहौल का द्योतक होता है। मेरा विश्वास है कि इस पत्रिका के प्रकाशन से पाठकों में राजभाषा के प्रति रुचि बढ़ेगी तथा पाठकों को पासपोर्ट, हिंदी व अन्य विषयों पर नवीनतम जानकारी प्राप्त होगी, जिससे हिंदी का प्रसार होगा।

''पांचाल पत्रिका'' के प्रकाशन से जुड़े क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, बरेली के सभी कार्मिकों को इसके सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

पबि मार्घेरिटा

(पबित्र मार्घेरिटा)

दिनांक : 31/12/2025
नई दिल्ली

Ministry of External Affairs, Room No. 1007, Jawaharlal Nehru Bhawan 23D Janpath Delhi-110011
Tel: 011-23017763, 23088710 Fax: 011-23016726 E-mail:mos.pm@mea.gov.in

अरुण कुमार चटर्जी
सचिव (सी.पी.वी. एवं ओ.आई.ए)
Tel: +91-11-24010770
email: secycpv@mea.gov.in

पांचाल

षष्ठम अंक (वर्ष 2026)

सत्यमेव जयते

विदेश मंत्रालय, नई दिल्ली
MINISTRY OF EXTERNAL AFFAIRS
NEW DELHI

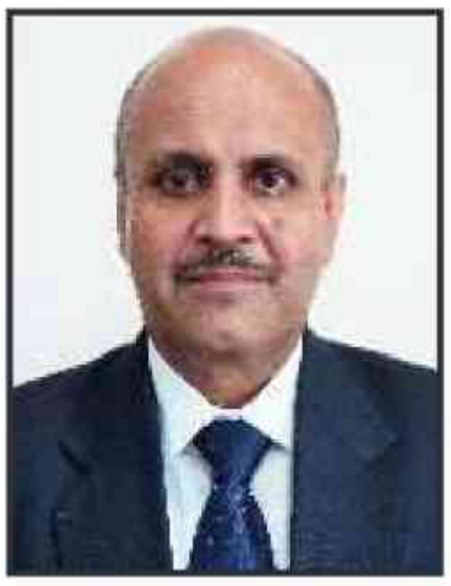

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि पासपोर्ट कार्यालय, बरेली की गृह राजभाषा पत्रिका 'पांचाल' के षष्ठम अंक को आप सभी के समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है। पत्रिका का नियमित रूप से प्रकाशन, राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए अत्यंत आवश्यक है।

संघ की राजभाषा नीति का अनुपालन सुनिश्चित करना प्रत्येक कार्यालय का संवैधानिक दायित्व है इसलिए हमें राजभाषा के प्रयोग को निरंतर बढ़ाने के लिए सतत प्रयासरत रहने की आवश्यकता है।

मेरी ओर से पांचाल पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को उनके योगदान के लिए हार्दिक बधाई तथा यह पत्रिका अपने लक्ष्य एवं उद्देश्य को प्राप्त करने में सफल हो, इसके लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

अरुण कुमार चटर्जी

(अरुण कुमार चटर्जी)
सचिव (सी.पी.वी. एवं ओ.आई.ए)

नई दिल्ली
दिनांक: 9 नवंबर 2025

पांचाल
षष्ठम अंक (वर्ष 2026)

सत्यमेव जयते

विदेश मंत्रालय, नई दिल्ली
MINISTRY OF EXTERNAL AFFAIRS
NEW DELHI

संदेश

यह मेरे लिए हर्ष का विषय है कि पासपोर्ट कार्यालय, बरेली द्वारा अपनी गृह राजभाषा पत्रिका **'पांचाल'** के **षष्ठम संस्करण** का प्रकाशन किया जा रहा है। इस पत्रिका का प्रकाशन नियमित रूप से किया जा रहा है, इसके लिए कार्यालय के कर्मी प्रशंसा के पात्र हैं।

राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में राजभाषा पत्रिकाओं का प्रकाशन अत्यंत सहायक होता है। इसके निरंतर प्रकाशन से कार्यालय में राजभाषा हिंदी के प्रयोग में वृद्धि हेतु अनुकूल वातावरण निर्मित होता है।

राजभाषा पत्रिका **'पांचाल'** के संपादक मंडल, कार्यालय के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों तथा इसके प्रकाशन से प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से जुड़े सभी कार्मिकों को मेरी हार्दिक बधाई।

मुबारक

(बी. एस. मुबारक)
संयुक्त सचिव (पी.एस.पी)
एवं मुख्य पासपोर्ट अधिकारी

संयुक्त सचिव (आरबीबी, आई एंड टी)
दूरभाष: 011-23086665
ई. मेल: jshindi@mea.gov.in

पांचाल

षष्ठम अंक (वर्ष 2026)

विदेश मंत्रालय, नई दिल्ली
MINISTRY OF EXTERNAL AFFAIRS
NEW DELHI

सत्यमेव जयते

शुभकामना संदेश

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, बरेली अपनी राजभाषा पत्रिका 'पांचाल' के छठवें अंक का प्रकाशन करने जा रहा है। कार्यालय द्वारा इस पत्रिका का प्रकाशन नियमित रूप से किया जाना दर्शाता है कि यह कार्यालय हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार को अत्यंत गंभीरता से लेता है।

वस्तुत: इस पत्रिका के माध्यम से यह प्रयास किया जा रहा है कि कार्यालय में ऐसा वातावरण तैयार हो जिससे अधिकारियों/कर्मचारियों को राजभाषा संबंधी नियमों, कानूनों और आदेशों की जानकारी तो मिले ही, साथ ही सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रगामी प्रयोग की तस्वीर भी दिखाई दे।

प्राचीन काल से ही भाषा और संस्कृति हमारे विकास और समृद्धि का परिचायक रहे हैं। विगत अनेक वर्षों से राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय सक्रिय भूमिका निभाता नजर आ रहा है। भाषा न केवल विचारों और भावनाओं की शाब्दिक अभिव्यक्ति है बल्कि विचारों की सहजता और सरलता की संवाहक भी होती है। यह अधिकारियों और कर्मचारियों का हिंदी के प्रति लगाव ही है कि कार्यालय संबंधी कार्यों की व्यस्तता के बीच भी पत्रिका का नियमित प्रकाशन संभव हो पा रहा है।

संघ की राजभाषा नीति के अनुपालन के लिए हमारा दायित्व है कि हम सब मिलकर प्रयास करें। हम स्वयं मूल कार्य हिंदी में करते हुए अन्य अधिकारियों और कर्मचारियों से भी राजभाषा संबंधी प्रावधानों का अनुपालन सुनिश्चित कराएं ताकि आमजन सभी सरकारी योजनाओं और कार्यक्रमों का लाभ निर्बाध रूप से उठा सकें। उम्मीद है, पांचाल इस दिशा में महत्त्वपूर्ण योगदान देगी।

मैं यह आशा भी करती हूँ कि यह पत्रिका हिंदी भाषा के संवर्धन के साथ-साथ सरल भाषा में विदेश मंत्रालय के विभिन्न कार्यों से देश की जनता और बाहरी दुनिया को अवगत कराएगी।

पत्रिका के नवीनतम अंक के सफल प्रकाशन के लिए साधुवाद।

अंजु रंजन

(अंजु रंजन)

पांचाल

षष्ठम अंक (वर्ष 2026)

संरक्षक की कलम से

भारत सरकार
विदेश मंत्रालय
क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, बरेली

शैलेंद्र सिंह (क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी)

भावों की अभिव्यक्ति के कई माध्यम होते हैं। इस ब्रह्मांड का हर जीव अपनी बात अपने तरीके से अन्य जीवधारियों तक पहुंचाता है। जीवधारियों को अन्य बहुत से प्राणियों के भाव समझ में भी आ जाते हैं। उदाहरण के लिए, रामचरित मानस के अनुसार त्रेता युग में जब भगवान राम की पत्नी सीता जी को रावण उठाकर ले जाता है। तब भगवान राम उनको ढूँढते हुए वन में मौजूद विभिन्न जीवधारियों से सीता जी के विषय में पूछते हैं :-

हे खग-मृग हे मधुकर श्रेनी। तुम्ह देखी सीता मृगनैनी।।
खंजन सुक कपोत मृग मीना। मधुप निकर कोकिला प्रबीना।।

इससे यह प्रतीत होता है कि वन में निवास कर रहे अन्य जीवधारी भगवान राम की बात समझ रहे थे और भगवान राम भी उनके भावों को जान सकते थे। इसके कई और उदाहरण भी हैं। जैसे हमारे बहुत सारे पालतू जानवर अपने मालिक की बात समझ जाते हैं और उसके इशारों पर काम करते हैं। एक रिंग मास्टर अपनी बात समझा ले जाने की वजह से शेर को अपनी अंगुलियों पर नचा पाता है और यही नहीं हम मानव भी पशु पक्षियों की बात को समझते हैं। पहले के समय में तो हम इनके इशारों को भी बहुत महत्त्व देते थे जैसे यदि किसी के घर के आस-पास सुबह-सुबह कौआ बोले तो यह माना जाता है कि कोई मेहमान घर आने वाला है। इसी तरह से नियमित रूप से कुत्ते या बिल्ली का रोना या मुआ चिड़िया का बोलना अशुभ संकेत माना जाता है।

उपरोक्त से स्पष्ट है कि अपने भावों को अभिव्यक्त करने के कई माध्यम होते हैं तथापि भाषा भावों की अभिव्यक्ति का सबसे सशक्त माध्यम होती है, और कोई भी व्यक्ति अपनी सर्वोत्तम अभिव्यक्ति मातृभाषा में ही दे सकता है। शायद इसीलिए संविधान सभा में सम्मिलित मनीषियों ने बहुत सोच समझकर हिंदी को भारत गणराज्य की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया।

14 सितम्बर, 1949 को हिंदी को राजभाषा के रूप में पहचान दी गई तथापि अभी तक हिंदी को उसका उचित स्थान नहीं मिल पाया है। यद्यपि पिछले कुछ वर्षों में राजभाषा के विषय में काफी सकारात्मक कदम

उठाये गए हैं। जिनमें अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन, क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन, संसदीय समिति द्वारा कार्यालयों का नियमित निरीक्षण व विभिन्न प्रकार के टूल्स के प्रयोग से हिंदी के प्रयोग का सरलीकरण आदि सम्मिलित हैं ।

वास्तव में हिंदी ने आमजीवन में तो बहुत प्रगति की है, परन्तु इसको राजभाषा के रूप में अभी बहुत आगे ले जाने की जरूरत है। हिंदी को उसका स्थान तब मिलेगा जब हमें अनुवाद की जरूरत नहीं पड़ेगी। किसी दूसरी भाषा के पीछे चलने वाली भाषा की परिधि से हमें हिंदी को निकालना होगा। हमें गुलामी की द्योतक भाषा को आगे के स्थान से हटाना होगा। मेरा मानना है कि हर भाषा को उसका स्थान मिले और हर भाषा को सम्मान मिले लेकिन राजभाषा की कीमत पर नहीं। राजभाषा और अन्य भाषाओं में वही अंतर रहना चाहिए जो माँ और मौसी में होता है मेरा मतलब यह है कि मौसी का पूरा सम्मान है लेकिन मौसी, माँ के बाद ही आती हैं और उनका स्थान उनके बाद होना चाहिए।

राजभाषा के विकास की जिम्मेदारी हम सभी सरकारी सेवकों की ही है। यदि हम सभी कृत–संकल्पित होकर राजभाषा को अपने दैनिक कार्यालयीन कार्यों में प्रयोग में लायेंगे तो निश्चित रूप से हम संविधान में दी गई अपनी एक जिम्मेदारी का अनुपालन सुनिश्चित कर पायेंगे। एक छोटी सी शुरूआत कर के देखिए और आप शीघ्र पायेंगे कि यह करना कितना आसान है और उसके परिणाम कितने सुखद होंगे। इस मामले में अपने कार्यालय का अपना अनुभव साझा करना चाहता हूँ कि धीरे–धीरे हमारे कार्यालय ने राजभाषा में उत्तरोत्तर प्रगति करते हुए आज हम नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति बरेली में एक मानक कार्यालय के रूप में देखे जाते हैं। इसका कारण यह है कि पासपोर्ट कार्यालय, बरेली में राजभाषा के प्रसार में उत्तरोत्तर वृद्धि दर्ज की जा रही है। हमारे कार्यालय में शत–प्रतिशत कार्य हिंदी में किया जा रहा है एवं राजभाषा के सभी प्रावधानों के अनुपालन को सुनिश्चित किया जा रहा है। हम कार्यालय में राजभाषा की पत्रिका पांचाल का नियमित प्रकाशन कर रहें हैं। इसके फलस्वरूप कार्यालय नगर राज भाषा कार्यान्वयन समिति, बरेली द्वारा लगातार राजभाषा में अच्छा कार्य करने के लिए पुरस्कृत किया गया। इसके अतिरिक्त विदेश मंत्रालय द्वारा विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर राजभाषा में अच्छा कार्य करने के लिए पासपोर्ट कार्यालय बरेली को "क" क्षेत्र के पासपोर्ट कार्यालयों में लगातार दो बार वर्ष 2021 व 2022 के लिए प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया और वर्ष 2025 के लिए पुनः हमारे कार्यालय को प्रथम पुरस्कार दिया गया । इसके साथ ही राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा हमारे कार्यालय को तीन वित्तीय वर्ष में उत्तर क्षेत्र –2 के केंद्रीय कार्यालयों में 11–50 कार्मिकों वाले कार्यालय की श्रेणी में द्वितीय पुरस्कार दिया गया।

किसी भी क्षेत्र में एक स्तर पा लेना जितना कठिन होता है उससे कठिन उस स्तर को बनाए रखना और उससे आगे बढ़ना होता है अतः अब हमारे सामने एक और जिम्मेदारी है कि हम कार्यालय को राजभाषा के क्षेत्र में इस स्तर से ऊपर ले जाए और इसके लिए हम सतत प्रयासरत भी हैं।

यहाँ यही कहना चाहूँगा कि क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय बरेली राजभाषा के सतत विकास के लिए प्रतिबद्ध है और अपने स्तर से वह इसके लिए लगातार अपना योगदान देता रहेगा। यहां यह तथ्य भी बेहद महत्त्वपूर्ण है कि राजभाषा के विकास की जिम्मेदारी हम सभी सरकारी सेवकों की इसलिए भी है चूंकि सरकार के नियमों,

सुविधाओं और व्यवस्थाओं को आम जनता तक पहुंचाने की जिम्मेदारी हम सरकारी सेवकों की ही होती है। इसलिए राजभाषा में काम करके आम जनता तक इन्हें पहुँचाने से राजभाषा का स्वयं विस्तार होगा। साथ ही हमें संवैधानिक दायित्वों के निर्वहन की आत्म संतुष्टि का भी आभास होगा। इन्हीं भावनाओं को संजोए हुए हम पासपोर्ट कार्यालय, बरेली में राजभाषा के प्रसार में नियमित रूप से वृद्धि की ओर अग्रसर हैं।

इसी क्रम में कार्यालय ने अपनी पत्रिका पांचाल के छठवें अंक का प्रकाशन करने का निर्णय लिया है। मुझे पूर्ण विश्वास है यह अंक पिछले अंकों से बेहतर होगा और हम इस अंक में पाठकों को ज्ञानवर्धक और रुचिकर साहित्य का समागम प्रस्तुत कर पाएंगें तथा राजभाषा के विकास में अपनी एक और आहुति देने का प्रयास करेंगे।

अंत में मैं पत्रिका प्रकाशन से जुड़े सभी सहयोगियों को इसके सफल प्रकाशन की शुभकामनाएँ एवं बधाइयाँ देता हूँ।

(शैलेन्द्र सिंह)
अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति
पासपोर्ट कार्यालय, बरेली

पांचाल

षष्ठम अंक (वर्ष 2026)

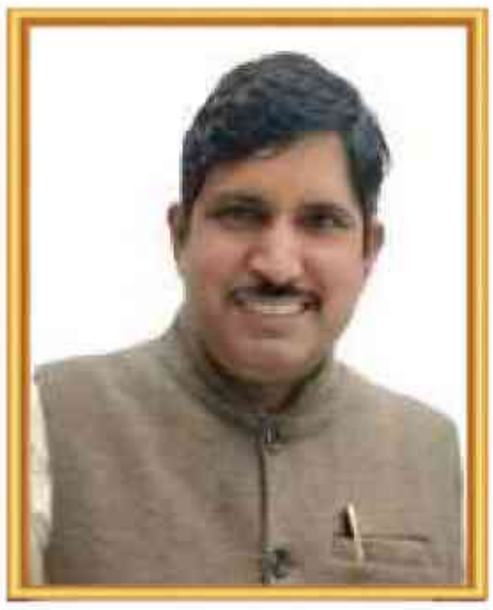

संपादकीय

दिनेश सिंह (वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी)

क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, बरेली की राजभाषा पत्रिका **"पांचाल"** का छठवाँ अंक पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमें अत्यंत प्रसन्नता एवं गौरव का अनुभव हो रहा है। यह पत्रिका न केवल कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा हिंदी के सशक्त प्रयोग का माध्यम है, बल्कि हमारे सांस्कृतिक, ऐतिहासिक एवं भाषाई वैभव का भी प्रतिनिधित्व करती है।

"पांचाल" के पिछले अंकों को सभी पाठकों ने जो प्रेम और स्नेह दिया है उसने हमें हर नए अंक को और बेहतर करने की प्रेरणा दी है। पिछले अंक के संबंध में विभिन्न महानुभावों ने अपनी उत्साहवर्धक टिप्पणियां प्रेषित की हैं उन सभी को सादर धन्यवाद ज्ञापित करते हुए हम पत्रिका के इस अंक की ओर आगे बढ़ते हैं।

"पांचाल" नाम स्वयं में गौरवशाली अतीत का प्रतीक है। प्राचीन भारत का प्रसिद्ध पांचाल राज्य भारतीय इतिहास और संस्कृति में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यह वही भूमि है जहाँ महाभारत काल में राजा द्रुपद का शासन था और जहाँ से द्रौपदी जैसी तेजस्वी नारी का उद्भव हुआ। पांचाल राज्य विद्या, वीरता, लोकतांत्रिक चेतना और सांस्कृतिक समृद्धि के लिए जाना जाता था। उसी ऐतिहासिक परंपरा से प्रेरणा लेते हुए हमारी पत्रिका "पांचाल" हिंदी भाषा, विचार और सृजनशीलता की उस गौरवशाली धारा को आधुनिक प्रशासनिक संदर्भ में आगे बढ़ाने का प्रयास करती है।

राजभाषा हिंदी भारत की आत्मा है। यह केवल एक भाषा नहीं, बल्कि जन–जन से संवाद स्थापित करने का प्रभावी माध्यम है। क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, बरेली निरंतर यह प्रयास करता रहा है कि कार्यालयीन कार्यों में हिंदी का अधिकतम प्रयोग हो तथा राजभाषा अधिनियम एवं नीति का अक्षरशः पालन किया जाए। इस दिशा में "पांचाल" पत्रिका एक सशक्त मंच प्रदान करती है, जहाँ अधिकारी एवं कर्मचारीगण अपनी रचनात्मक प्रतिभा, अनुभव और विचारों को हिंदी में अभिव्यक्त कर सकते हैं।

इस अंक में सम्मिलित लेख, कविताएँ, संस्मरण, अनुभव–वृत्तांत एवं राजभाषा से संबंधित विषय न केवल भाषा के प्रति लगाव को दर्शाते हैं, बल्कि यह भी सिद्ध करते हैं कि हिंदी में कार्य करना सहज, प्रभावी और गरिमामय है। यह सामग्री पाठकों को प्रेरित करेगी कि वे अपने दैनिक कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के प्रयोग को और अधिक प्रभावी तरीके से करें।

हम आशा करते हैं कि "पांचाल" का यह अंक राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा तथा कर्मचारियों में रचनात्मक अभिव्यक्ति और भाषाई आत्मविश्वास को और सुदृढ़ करेगा। इस अवसर पर मैं पासपोर्ट कार्यालय, बरेली के क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी महोदय का उनके सतत मार्गदर्शन के लिए हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ साथ ही सभी लेखकों, पत्रिका प्रकाशन समिति के सदस्यों एवं प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग देने वाले सभी सहकर्मियों के प्रति भी आभार व्यक्त करता हूँ।

आइए, हम सब मिलकर हिंदी को केवल सरकारी कार्य की भाषा ही नहीं, बल्कि संस्कार, संवाद और संकल्प की भाषा के रूप में स्थापित करें और "पांचाल" की इस परंपरा को निरंतर आगे बढ़ाएं।

हिंदी में है चेतना, हिंदी में हैं प्राण,
हिंदी में है देश का, स्वाभिमान सम्मान
हिंदी सूर कबीर है, हिंदी है रसखान,
आओ सब मिलकर करें, हिंदी का उत्थान।

आप सभी सुधी पाठकों से अनुरोध है कि आप पत्रिका को पढ़कर अपनी टिप्पणी जरूर भेजें ताकि अपनी कमियों को दूर कर हम भविष्य में और बेहतर करने के लिए प्रेरित हों और लगातार आपके समक्ष परिमार्जित पत्रिका प्रस्तुत कर राजभाषा के विकास में अपना योगदान देते रहें।

(दिनेश सिंह)
सचिव, राजभाषा कार्यान्वयन समिति
पासपोर्ट कार्यालय, बरेली

पांचाल

षष्ठम अंक (वर्ष 2026)

अनुक्रम

क्र.सं.	शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ सं.
1	हमारे पास वर्तमान ही है	शैलेंद्र सिंह	13–14
2	जल संरक्षण: हमारी जिम्मेदारी, सबका भविष्य	संदीप शुक्ला	15–16
3	पर्यावरण	कौशल सिंह	16
4	रिश्ते	विनय चंद्र	17
5	बचपन	खीम सिंह	17
6	नौटंकी लोक नृत्य: उत्तर प्रदेश की सांस्कृतिक धरोहर	तुषार पाठक	18–19
7	गाँव की मिट्टी और मीठी यादें	संदीप सिंह	20
8	मैं अरावली हूँ	काव्यांश कुमार	20
9	मेरी पहली सर्विस बुक	अनन्या लवानिया	21–22
10	जुनून इंसान को असंभव से संभव की ओर ले जाने वाली शक्ति	अलीम हुसैन	22–23
11	बेटी	आकांक्षा सक्सेना	23
12	सरकारी नौकरी	दिनेश सिंह	24–25
13	वक्त का आईना	प्रियंबदा दुबे	25
14	जैसा अन्न वैसा मन	रंजीत कुमार दास	26–27
15	चुप ही रहो	प्रीति रानी	27
16	एक मेहनती बेटा	अब्दुल समद	28
17	पैसों की असली कीमत	मिथुन कुमार	28–29
18	खामोशी का श्रम	श्रेय कृष्ण सक्सेना	30
19	मुझको खुश रहने का हक है	अनुराग दुबे	30
20	आधुनिक जीवन में योग की भूमिका	रेखा	31–33
21	विश्वास	हेमा	33
22	बिना गणित के सब सूना है, हर रिश्ता एक नमूना है,	सुमित कुमार	34
23	गंगा नदी: आस्था, जीवन और जिम्मेदारी	अभिषेक पटेल	35–36
24	माँ के बिना घर, घर नहीं होता	दिलीप सिंह	37
25	वे कहते हैं मैं बदल गई	रिद्धि सिंह	37
26	सफलता एक अंतहीन दौड़	सिद्धार्थ प्रताप सिंह	38–39

छायाचित्र अनुक्रम

27	आई.टी.बी.पी. एवं पासपोर्ट कार्यालय द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित स्वच्छता पखवाड़ा, वन्दे मातरम् कार्यक्रम के छायाचित्र	40
28	कार्यालय द्वारा आयोजित हर–घर तिरंगा यात्रा के छायाचित्र	41
29	पासपोर्ट समाचार	42
30	स्वच्छोत्सव में आयोजित निबंध प्रतियोगिता के छायाचित्र	43
31	पासपोर्ट कार्यालय में आयोजित स्वास्थ्य शिविर के छायाचित्र	43
32	अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के छायाचित्र	44

हमारे पास वर्तमान ही है

क्या आपने कभी गौर किया है कि कैसे कुछ लोग जीवन भर घबराते ही रहते हैं, हर छोटी बात को व्यवस्थित करने, सुलझाने और नियंत्रित करने की कोशिश करते रहते हैं, मानो जैसे उन्होंने खुद को ब्रह्माण्ड का मुख्य कार्यकारी अधिकारी (CEO) नियुक्त कर लिया है और यदि उन्होंने कामकाज नहीं संभाले तो सारी व्यवस्था गड़बड़ हो जाएगी। क्या शायद आप भी वही व्यक्ति हैं ?

सच तो यह है कि जीवन पक्के तौर पर उन स्थितियों से भरा पड़ा है, जिन्हें हम बदल नहीं सकते, चाहे हम कितना नापसंद करते हो या उनसे कितने ही असहमत क्यों न हों कभी–कभी जीवन भ्रमित करने वाला और कठिन होता है और कई सवालों के उत्तर नहीं मिलते हैं, भले ही आप इसमें कितनी ही गंभीरता और गहराई से विचार करें ।

शांत, समदर्शी जीवन का एक हिस्सा है परिस्थितियों को स्वीकार करना, सीखना। विनम्रता वास्तव में अपनाने योग्य एक अत्यंत आरामदायक रवैया है। यह सुकून है जो हमें तब महसूस होता है जब हम उन चीजों का विरोध करना बंद कर देते हैं जिनका विरोध करना हमारा काम नहीं है।

यह केवल एक मिथक है जो कि हम अपने आपको सुनाते रहते है कि हमें हर समय खुश रहना चाहिए, अथवा भ्रमित या थका हुआ होना ऐसी समस्या है, जिसका हमें तत्काल हल निकालना चाहिए। लेकिन एक लम्बे अनुभव के बाद आप समझ पाते हैं कि भ्रम, थकान या पीड़ा इतनी भी बुरी नहीं है बल्कि सबसे अधिक नुकसान तो हमें प्रतिरोध की भावना से होता है।

अब फिर हमारे पास क्या है तो हम कह सकते है कि हमारे पास वर्तमान है।
तब फिर हम क्या कर सकते हैं ?
–जब हम किसी बात को नहीं जानते स्पष्ट कह सकते हैं, मैं नहीं जानता ।
–परिपूर्णता यानी परफेक्शन की इच्छा न करें
–अनिश्चितताओं को सुलझाने के लिए जबरदस्ती निष्कर्ष निकालने या जल्दबाजी करने की प्रवृत्ति से सजग रहें ।
– धैर्य रखें ।
– अपनी कम से कम हंसी उड़ाएं ।
– आभारी बने रहें ।कृतज्ञता का भाव हमेशा रखें ।
– और इस तरह अपने वर्तमान में रहें ।

हम एक उदाहरण से समझ सकते हैं कार्यालय में काम करते हुए तनाव (Stress) और दबाव हटाने के बारे में सोचते हुए हम छुट्टी लेकर अपने गृहनगर जाने या पहाड़ इत्यादि में घूमने जाने की सोचते हैं और छुट्टियों में उसके जल्दी खत्म होने की घबराहट, या आगे क्या करने में व्यग्र रहते हैं। क्योंकि हम भविष्य नामक किसी पौराणिक

गैर–मौजूद जगह के बारे में सोचना बंद नहीं कर सकते, तो हम अपनी नौकरी के गुलाम बन जाते हैं, जहाँ हमारे लिए बेहतर सेवानिवृत्ति का विकल्प होगा।

क्या यह हास्यास्पद नहीं है कि मनुष्य अतीत की यादों में घिरा रहकर या भविष्य की चिंता करते हुए खुद को परेशान करने के लिए हर संभव प्रयास करता है। इसलिए इन सभी परेशानियों और जटिलताओं से दूर रहने के लिए वर्तमान में जियें, अपने शरीर अपनी इन्द्रियों से जुड़े, शरीर को सक्रिय रखें और दिमाग को शांत। वर्तमान में जो अच्छा लगे जैसे कभी कभी सैर करना, दौड़ना, संगीत सुनना इत्यादि करें और वर्तमान में रहें।

क्योंकि हमारे पास केवल वर्तमान है ।

शैलेंद्र सिंह
(क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी)

पांचाल

षष्ठम अंक (वर्ष 2026)

जल संरक्षणः हमारी जिम्मेदारी, सबका भविष्य

जहाँ नल का पानी हर दिन आता है, वहाँ पानी हर दिन बासी हो जाता है, हर दिन बहा (फेंक) दिया जाता है। एक्सपायरेशन अवधि 1 दिन। जहां नल का पानी 2 दिन में आता है, वहाँ 2 दिन में पानी बासी हो जाता है और बहा दिया जाता है। एक्सपायरेशन अवधि 2 दिन । जहां आठ दिन बाद पानी आता है, वहाँ 8 दिन में पानी बासी हो जाता है और बहा दिया जाता है। एक्सपायरेशन अवधि 8 दिन।

रेगिस्तान की यात्रा के समय पानी तब तक ताजा रहता है जब तक फिर से पानी न मिले।

जहाँ बाँध और तालाब में पानी जमा रहता है वहाँ अगली बरसात तक पानी ताजा रहता है, वहीं सूखे की स्थिति में पानी अगले मानसून तक ताजा रहता है। जहां 50 फीट से 500 फीट के बोरवेल या कुएँ से पानी आता है, वहाँ पानी जमीन के नीचे सैकड़ों साल पुराना है फिर भी ताजा रहता है। वहीं दूसरी ओर शादी-समारोह में अगली पानी की बोतल मिलते ही हाथ की बोतल का पानी बासी हो जाता है। कुल मिलकर पानी के उपयोग की समय सीमा (एक्सपायरी) हमने बिना किसी मापदंड के, केवल अपनी सोच व सुविधानुसार बना ली है। लेकिन पृथ्वी पर पानी हमारी सोच के आधार पर सदैव नहीं बना रहेगा। जल संरक्षण हम सबकी जिम्मेदारी है।

आज जब मैं उम्र के इस पड़ाव पर बैठकर अपने बचपन के दिनों को याद करता हूँ तो एक बात साफ दिखाई देती है- तब पानी के लिए इतनी चिंता कभी नहीं करनी पड़ती थी। कुएँ तालाब भरे रहते थे, नदियों में भी पानी स्वच्छ रहता था, धरती में पानी का स्तर इतना अच्छा था कि कम गहरे हैंड-पम्प से काम चल जाता था गहरे-गहरे बोरवेल की जरूरत नहीं पड़ती थी। लेकिन समय बदला है और हमारा जीवन-स्तर व जीवन शैली भी। पानी की कमी अब कहीं दूर की आशंका नहीं, बल्कि हमारे दर पर खड़ी सच्चाई है। हम सभी जानते हैं कि पानी जीवन का आधार है- हमारा ही नहीं बल्कि सभी पशु-पक्षी, जीव-जंतु, वृक्ष, सम्पूर्ण प्रकृति का भी। पर अक्सर हम सभी इसे उतनी ही आसानी से बहा भी देते हैं जैसे इस पर हमारा एकाधिकार है और यह कभी खत्म ही नहीं होगा।

धरती पर उपलब्ध कुल पानी का बहुत छोटा हिस्सा ही पीने लायक है और वह भी औद्योगिकीकरण, हमारी जीवन शैली के कारण धीरे-धीरे प्रदूषित और कम होता जा रहा है। पानी की कमी के कारण कई शहरों में पानी की आपूर्ति सीमित कर दी गई है। गर्मियों में तो स्थिति और भी भयावह हो जाती है और टैंकरों से पानी सप्लाई होता है। गावों में भी पानी के स्त्रोत सूखने लगे हैं। खेती पर निर्भर परिवार की मुश्किलें बढ़ती जा रहीं हैं। शहरीकरण के कारण कृषि योग्य जमीन कम होती जा रही है। औद्योगिकीकरण के कारण सीवर व रासायनिक तत्व तालाब- नदियों में डाले जा रहे हैं जिससे बचा खुचा पानी भी प्रदूषित हो रहा है और बीमारियाँ फैला रहा है। जल संकट व प्रदूषण केवल पर्यावरणीय समस्या नहीं है बल्कि सामाजिक आर्थिक और कानून व्यवस्था के लिए चुनौती भी बनता जा रहा है। जल प्रदूषण का आलम यह है कि शायद ही शहरों में ऐसा कोई घर-दफ्तर या संस्थान हो जहाँ जल शुद्धिकरण के लिए यंत्र न लगा हो।

जल संरक्षण कोई बड़ी तकनीकी प्रक्रिया नहीं है। इसे हम अपनी जीवनशैली को सुधार कर छोटी-छोटी आदतों से कर सकते हैं जैसे-

- नल खुला छोड़ने के बजाय जरूरत के बाद उसे बंद करना।
- रोजमर्रा के कार्यों में पानी का अपव्यय न करें जैसे- नहाते, कपड़े-गाड़ी धोते समय नल या पाइप की बजाय बाल्टी-मग का इस्तेमाल करें।
- वृक्षारोपण पर जोर देना जिससे जल स्तर बढ़ सके।
- खेतों में पानी की बचत करने वाली तकनीकों (जैसे ड्रिप सिंचाई) व कम पानी की खपत वाली फसल की किस्मों का उपयोग करना।
- प्रकृति हमें भरपूर पानी देती है लेकिन हम उसका प्रबंधन नहीं कर पाते। वर्षा का 90% जल उचित संचयन व्यवस्था न होने के कारण बहकर बर्बाद हो जाता है। इसके लिए घरों व संस्थानों में वर्षा जल संग्रहण (रेन वाटर हारवेस्टिंग) को अपनाना।
- हम सरकार व अन्य संस्थानों के सहयोग से नदी-तालाब को साफ कर उनकी गहराई बढ़ाकर वर्षा जल को और संचित कर सकते हैं।
- सीवर / रसायन मिश्रित पानी शोधित कर ही नदी तालाबों में डाला जाये जिससे प्राकृतिक पानी पीने योग्य बना रहे।

हम अपनी आने वाली पीढ़ी को बेहतर भविष्य देना चाहते है यह तभी संभव है जब हम उसे पर्याप्त व स्वच्छ जल दे सके। यदि आज हम सजग नहीं हुए, तो केवल पछतावा ही बचेगा। जल संरक्षण कोई विकल्प नहीं, यह समय की मांग है। इसे हमें अपनी आदत बनाना होगा। यह सोचकर हर कदम उठाएं कि जल की प्रत्येक बूंद कल को सुरक्षित रखेगी। पानी की सुरक्षा सरकार, समाज और हम सब की सामूहिक जिम्मेदारी है। आइये स्वयं के भविष्य के साथ-साथ संपूर्ण प्रकृति के भविष्य के लिए जल संरक्षण को एक संकल्प बनाएं ।।

संदीप शुक्ला, सहायक पासपोर्ट अधिकारी

कौशल सिंह
सहायक अधीक्षक

पर्यावरण

कटे पेड़ टूटी चट्टानें,
सड़कों का विस्तार हुआ।
कहीं टनल कहीं फ्लाई ओवर,
कुछ सफर जरूर आसान हुआ ।।

अब नहीं रहे वो बाग-बगीचें,
जहाँ पक्षी कलरव करते थे।
और आते-जाते राहगीर भी,
फल खाकर पेट भर लेते थे।।

अब नहीं है वो छाँव घनी,
और न है वो पवन सुहानी।

हुआ प्रदूषित वायुमंडल सारा,
प्रदूषित हुआ नदियों का पानी ।।
लहलहाती थीं जिन खेतों में फसलें,
कॉलोनियों का उनमें अब विकास हुआ।
विकास की इस रफ्तार में देखो,
पर्यावरण का है क्या हाल हुआ।।

यूँ तो पर्यावरण संरक्षण हेतु,
हम पौधे हर वर्ष लगाते हैं।
क्या कभी फिर भूलकर भी,
देखने उनको जा पाते हैं ।।

रिश्ते

पता नहीं क्यों,
अब रिश्तों में वो पहले जैसी बात नहीं रही
शायद वक्त के हाथों में ही
अब वो करामात नहीं रही।

रिश्ते वही हैं, लोग वही हैं,
नाम भी वही हैं, मगर
दिलों में अब पहले जैसी
वो कैफियत,वो मुरव्वत वो मिठास नहीं रही।

जो ताल्लुक़ रग-रग में बनकर बहते थे,
उनकी रफ्तार थम गई
अब उनमें वो हरारत वो बात नहीं रही।

हर एक रूह उलझी है
अपने ही सवालों में
इस भीड़ में अब किसी को किसी की
तलाश नहीं रही।

जो मेरी आहट से
पहचान लिया करते थे मुझे,
मैं चीखता हूँ फिर भी
मेरी पहचान नहीं रही।

मैं भी अब बिछड़ने से किसी को रोकता नहीं
क्योंकि पलटना, पलट कर देखना
इस दौर के सफर की पहचान नहीं रही।

विनय चंद्र
सहायक अधीक्षक

"बचपन"

काश मेरा बचपन वापस आ जाता,
वो साथियों का साथ मिल जाता।।
पत्थर तोड़कर गोटियाँ बनाता,
साथियों के साथ गोटी खेलता।।
पांच दस पैसे की गुच्ची खेलता,
फिर पैसे के कारण खूब लड़ाई लड़ता।।
काश मेरा बचपन वापस आ जाता,
किसी के नींबू व किसी के सेब चुराता।।
लाल अगोंछा ओढ़ बंदर का भेष बनाता,
किसी के आडू या किसी के ककड़ी चुराता।।
काश वो साथियों का साथ मिल जाता,
मेरा बचपन वापस आ जाता।।
कुर्ते के बटन तोड़कर गुच्छी खेलता,
घर पहुंच कर पिता जी से खूब पिटता।।
भारी बारिश में लाल अंगौछा लपेटे,
किसी के आम या किसी के अमरूद चुराता।।

फिर शिकायत घर पर होती,
फिर पिता जी से खूब पिटता।।
काश मेरा बचपन वापस आ जाता,
वो साथियों का साथ मिल जाता।।
माता पिता जी की डाँट खाता ,
बिच्छू घास उनके हाथ होता।।
मैं डर के मारे बिना कच्छे के भाग जाता,
काश मेरा बचपन वापस आ जाता।।
किल्मड बेडू घिघारू का फल खाता,
काश वो साथियों का साथ मिल जाता ।।
गाय बछियों के बहाने दिन भर नदी में रहता,
काश मेरा बचपन वापस आ जाता।।
वो साथियों का साथ मिल जाता।।

खीम सिंह
सेवा निवृत्त
सहायक अधीक्षक

नौटंकी लोक नृत्यः उत्तर प्रदेश की सांस्कृतिक धरोहर

उत्तर प्रदेश की सांस्कृतिक धरोहर में नौटंकी लोक नृत्य का एक अहम स्थान है। यह न केवल कला का एक अद्भुत रूप है, बल्कि एक सशक्त सामाजिक माध्यम भी है, जिसके द्वारा लोग अपने विचारों, संवेदनाओं और जीवन के अनुभवों को रंग-बिरंगे अंदाज में व्यक्त करते हैं। नौटंकी का मंचन गांवों और कस्बों में खासतौर पर बड़े उत्सवों, मेलों और शादी-ब्याह आदि अवसरों पर किया जाता है। इसके साथ जुड़ा हर कार्यक्रम एक बड़ा सामूहिक उत्सव बन जाता है, जो सिर्फ मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि सामाजिक जागरूकता फैलाने का भी एक महत्वपूर्ण मंच बनता है।

नौटंकी का इतिहास और उसका महत्व

नौटंकी का इतिहास सदियों पुराना है। यह एक ऐसा कला रूप है, जिसमें नृत्य, संगीत और अभिनय का अनोखा मिश्रण होता है। शुरुआत में यह गांवों में एक तरह से लोककथा सुनाने का तरीका था, जहाँ लोग धार्मिक, सामाजिक और नैतिक संदेशों को इस रूप में प्रस्तुत करते थे। शुरु में इसका मंचन मंदिरों, मेलों और धार्मिक आयोजनों पर हुआ करता था। धीरे-धीरे यह गांवों की चौपालों, गलियों और स्थानीय मेलों तक फैल गया।

नौटंकी के द्वारा न केवल धार्मिक कथाएँ सुनाई जाती हैं, बल्कि समाज में फैली बुराइयों और कुरीतियों के खिलाफ भी संदेश दिया जाता है। यह एक तरह से कला के माध्यम से समाज को जागरूक करने का प्रभावी तरीका बन गया है।

प्रदर्शन की तैयारी और कलाकारों की मेहनत

नौटंकी के कार्यक्रम की शुरुआत हमेशा बड़े धूमधाम से होती है। कलाकार घंटों रिहर्सल करते हैं, ताकि उनकी प्रस्तुति शानदार हो। स्क्रिप्ट से लेकर संवाद, अभिनय, नृत्य और संगीत सभी पहलुओं पर पूरी तैयारी की जाती है। कलाकारों को अपने संवादों में उतनी ही प्रवीणता और ऊर्जा की आवश्यकता होती है, जितनी कि नृत्य में। यह कला का एक ऐसा रूप है, जिसमें हर कलाकार का योगदान महत्वपूर्ण होता है।

नृत्य की तैयारी भी काफी मेहनत का काम है। कलाकार अपनी हर एक हरकत, कदम और भावनाओं को बहुत सटीक तरीके से मंच पर उतारने का प्रयास करते हैं। वहीं, संगीत का भी महत्वपूर्ण स्थान होता है, क्योंकि नौटंकी में संगीत के बिना कोई भी प्रदर्शन अधूरा रहता है। गीत और संगीत के बीच तालमेल इस कला को और आकर्षक बना देता है।

वेशभूषाः एक आकर्षक रंगीन दुनिया

नौटंकी में वेशभूषा का खास महत्व है। कलाकार जो किरदार निभाते हैं, उसके अनुसार उनका पहनावा भी खास होता है। महिलाएँ आमतौर पर चटक रंगों की साड़ी पहनती हैं, जो नृत्य के साथ पूरी तरह मेल खाती है। वहीं,

पुरुष कलाकार पारंपरिक धोती और कुर्ते में मंच पर आते हैं। अक्सर, कलाकारों को विशेष शृंगार भी किया जाता है, जैसे देवता, राक्षस, या अन्य ऐतिहासिक पात्रों के रूप में वे रंग-बिरंगे गहनों और मेकअप से सजते हैं। यह वेशभूषा पूरी प्रस्तुति को और भी आकर्षक और प्रभावशाली बना देती है।

आयोजन और दर्शक: एक सामूहिक उत्सव

नौटंकी का आयोजन मुख्य रूप से गांवों में किया जाता है। इसे मेलों, धार्मिक त्योहारों और खास अवसरों पर आयोजित किया जाता है। जैसे होली, दीपावली, जन्माष्टमी, और अन्य बड़े अवसरों पर, जब पूरा गाँव एकजुट होता है, तब नौटंकी का आयोजन किया जाता है। इन आयोजनों में ना केवल गांव के लोग, बल्कि आस-पास के अन्य इलाके के लोग भी बड़ी संख्या में शिरकत करते हैं।

नौटंकी का मंचन एक सामूहिक उत्सव बन जाता है, जिसमें छोटे-बड़े सभी लोग भाग लेते हैं। बच्चे उत्सुकता से कलाकारों के अभिनय और नृत्य का आनंद लेते हैं, जबकि बड़े लोग उसे पुराने समय की परंपराओं और सभ्यता की यादों के रूप में देखते हैं। यह एक ऐसा अवसर होता है जब गाँव के लोग अपने व्यस्त जीवन से कुछ समय निकालकर एक साथ बैठते हैं और सांस्कृतिक आनंद का हिस्सा बनते हैं।

सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभाव

नौटंकी लोक नृत्य उत्तर प्रदेश की एक जीवंत और रंगीन सांस्कृतिक धरोहर है, जो आज भी ग्रामीण इलाकों में बड़े धूमधाम से मनाई जाती है। यह न केवल मनोरंजन का एक साधन है, बल्कि समाज के प्रत्येक वर्ग के लिए एक जुड़ाव, एकता और जागरूकता का माध्यम भी है। समय के साथ, यह लोक नृत्य न केवल अपने मूल रूप में बल्कि नए रूपों में भी प्रचलित हुआ है। लेकिन इसका असली उद्देश्य वही है कला के माध्यम से समाज को जागरूक करना, जोड़ना और सांस्कृतिक विविधता को मनाना।

नौटंकी की यह परंपरा आने वाली पीढ़ियों के लिए एक अमूल्य धरोहर साबित होगी, जो सदियों तक हमारे समाज में जीवित रहेगी।

तुषार पाठक
सहायक अधीक्षक

गाँव की मिट्टी और मीठी यादें

वो पीपल की छाँव और बूढ़ी सी चौपाल,
जहाँ बैठ सुनते थे दादा के किस्से हर हाल।
वो कच्ची सड़क, वो मेढ़ों का रास्ता,
शहर की दौड़ में भूला, बचपन का वास्ता।

वो खेतों की हरियाली, वो मिट्टी की खुशबू,
मन को आज भी खींचती, जैसे कोई जादू।
गाय-भैंस का रंभाना, और पक्षियों का शोर,
याद आता है फिर से, जीवन का वो भोर।

वो नदियों का पानी, वो कुएँ की गहराई,
जहाँ शाम को होती थी, सब की ही परछाई।
वो सादगी भरे चेहरे, वो निष्कपट प्रेम,
जहाँ रिश्तों में नहीं था, कोई छल या वहम।

वो आंगन में सोना, वो तारों को गिनना,
अब एयर कंडीशनर में कहाँ चैन मिलना ?
वो खुले आसमान और वो गहरी नींद,
जहाँ नहीं थी मोबाइल की कोई भी पीर।

वो त्योहारों की धूम, वो मिलकर के खाना,
अब उस स्वाद को कहीं ढूँढ न पाना।
गाँव बसता है दिल में, बस यही एक सच है,
शहर में रहकर भी, आत्मा वहीं अचल है।

संदीप सिंह
डाटा एंट्री ऑपरेटर

मैं अरावली हूँ

मैं पत्थर का ढ़ेर नहीं, उत्तर भारत की ढाल हूँ,
रेगिस्तान को रोके खड़ा, मैं सदियों का प्रतिपाल हूँ।

तुमने मेरी ऊंचाई नापी पर मेरी गहराई भूल गए,मैं
प्यासी धरा का कुंभ हूँ, तुम यह सच्चाई भूल गए।

क्रेन और बारूदों से, जो मेरे सीने को चीरोगे, तो
याद रखना, तुम अपनी ही सांसों की नींव खोदोगे।

हरियाली अगर छीन ली मेरी, तो धूल का मंजर
आएगा, ये जो शहर चमचमाते हैं मरुस्थल इन्हें
खा जाएगा।

बचा लो मुझे क्योंकि मैं तुम्हारी आने वाली नस्लों
का आधार हूँ,

मैं अरावली हूं और आज खुद अपने अस्तित्व के
लिए लाचार हूँ।

काव्यांश कुमार
डाटा एंट्री ऑपरेटर

मेरी पहली सर्विस बुक

तो ये वाक्या है 20 नवम्बर 2025 का, उस दिन मैं अपनी पहली सरकारी नौकरी की नियुक्ति के लिए अपने कार्यालय जा रही थी और मेरा नियुक्ति पत्र आज मुझे मिला था। अंदर से बहुत ही उत्साहित थी पर जैसा कि अक्सर सभी के साथ होता है काफी हद तक डरी हुई भी थी। सुबह जल्दी आगरा से अपने परिवार के साथ निकली नियुक्ति के लिए पूरे रास्ते तो कुछ आभास नहीं हुआ। परन्तु जैसे ही मेरे परिवार जन मुझे मेरे कार्यालय छोड़ कर जाने लगे और मुझे अकेले ही अंदर जाना था। मेरी बेचैनी बढ़ने लगी। हालांकि पहली बार नहीं जा रही थी मैं, पिछले ही हफ्ते दस्तावेज सत्यापन के लिए आना हुआ था फिर भी भावनाओं का एक बवंडर मन में उठ रहा था। डरी सहमी पर उत्साहित मैं कार्यालय में आ गयी प्रशासनिक अनुभाग में आकर मेरी भेंट दिनेश जी से हुई जो कि हमारे कार्यालय के प्रशासन प्रभारी हैं। उनका स्वभाव बहुत स्वागतपूर्ण था वही मेरी नियुक्ति की सभी औपचारिकताएं करवा रहे थे और धीरे धीरे मुझे कार्यालय से अवगत करवा रहे थे। फिर आती है बारी मेरी 'सर्विस बुक' भरने की। दिनेश जी ने मुझे बहुत ही शांतिपूर्वक तरीके से समझाते हुए कहा कि, 'अनन्या जी ये आपकी सर्विस बुक है, इस कार्यालय में आप जब तक काम करेंगी ये आपके साथ रहेगी। जो भी छोटी–बड़ी चीज इस कार्यालय से सम्बंधित होगी वो इस सर्विस बुक में दर्ज की जाएगी। आपके सेवानिवृत होने तक। यही कारण है कि इस सर्विस बुक का प्रथम पृष्ठ भरने के लिए हम आपसे कह रहे हैं। जिससे ३५ साल बाद जब आप इसको देखें तो आपको ऐसा न लगे कि अरे! उस दिन यह पृष्ठ किसी और से इतने खराब हस्तलेख में भरवा दिया था और मेरी सर्विस बुक खराब कर दी। तो आपसे जितना अच्छे से व आराम से हो सके इसका प्रथम पृष्ठ भरिये अपना पूरा समय लीजिये और जल्दबाजी की कोई बात नहीं है, बस गलती करने से बचियेगा। उस प्रथम पृष्ठ पर मांगी गयी सभी जानकारी मैंने बड़े ही आराम से भरी कुछ भी लिखने से पहले 2–3 बार पढ़ा और जितना मुझसे हो सका उतना अच्छा हस्तलेख रखते हुए मैंने ये कार्य कर लिया। जब ये पृष्ठ मैंने दिनेश जी को दिखाया उन्होंने कहा सब कुछ ठीक है बस यह ऊपर आपका एक फोटो लगाने के उपरांत उस पर आर.पी.ओ सर वाली मोहर लगा लीजिये। मेरी पहली नियुक्ति थी, तो मोहर लगाना या किसी सरकारी दस्तावेज पर हस्ताक्षर करना सच कहूँ तो मेरे लिए बहुत ही उत्साहित कर देने वाला कार्य था। तो मैंने वैसा ही किया जैसा कि मुझसे दिनेश जी ने कहा था फोटो लगाकर मोहर लगाने लगी। मोहर के ऊपर एक तीर का चिह्न बना रहता है जिसका सीधा होना मोहर के सीधा होने का सूचक होता है। तो उस चिह्न को देखने के बाद मैंने मोहर सीधा सर्विस बुक पे लगी फोटो पर लगा दिया। सब कुछ आराम से करने के बाद भी बस यहीं गलती हो गयी कि मोहर मैंने पहले किसी खाली पन्ने पर लगाकर नहीं देखी। जैसे ही मैंने मोहर उठाई मैंने देखा कि फोटो पर मोहर उल्टी लग गई है। सच कहूँ तो उस समय पर तो मेरी घबराहट सुबह से भी अधिक बढ़ गयी। नवम्बर के महीने में भी चार पंखों के बीच मुझे पसीना आने लगा ये सोच कर कि कार्यालय में पहला ही काम मैंने गलत कर दिया वो भी इतने अच्छे से और समय लेकर समझाए जाने के बाद पर अब क्षति–पूर्ति मेरे हाथ में तो थी नहीं इसलिए बहुत ही शर्मिंदगी और दबे हुए स्वर में मैंने कहा, सर ये तो उल्टी लग गयी है। मेरे इतना कहते ही निराशा दिनेश जी के चेहरे पर मुझे साफ दिखाई दे रही थी और अत्यंत निराशाजनक स्वर में उन्होंने कहा, अरे अनन्या जी। ऐसा कुछ न हो इसलिए ही तो इतना समय लेकर हमने इस सर्विस बुक और उसके प्रथम पृष्ठ का महत्त्व आपको समझाया था पर..आगे उन्होंने हल्की

मुस्कुराहट के साथ बोला कि आम तौर पर देखा जाता है कि लड़कियों या महिलाओं की रुचि साज–सजावट के कार्यों में अधिक होती है परन्तु आपने तो मोहर ही उल्टी लगा दी। मैं बहुत शर्मिंदा थी और डरी हुई भी, इसलिए मैंने कोई सफाई न पेश करते हुए मौन रहना ही ठीक समझा। दिनेश जी आगे कहते हैं कि चलिए मिथुन जी को दिखा लीजिये क्या कर सकते हैं। जैसे तैसे मिथुन जी ने पानी और रुमाल की सहायता से फोटो का निशान तो हटा दिया परन्तु पृष्ठ से मोहर न हट सकी। उन्होंने कहा चलो फोटो से तो हट गया है, दूसरी तरफ सीधी मोहर लगा लेते हैं। इतना करने के बाद जब मैंने सर्विस बुक दिनेश जी को दिखाई उन्होंने कहा, हाँ ये सब तो ठीक है पर पृष्ठ के पिछले भाग पर भी एक मोहर लगेगी। अंत में मैंने सहमते हुए पूछा, क्या मोहर मैं लगाऊं सर ? उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा, नहीं लाइए मुझे दीजिये। बड़ी विनम्रता और एक मुस्कान के साथ उन्होंने मुझे समझाया कि, देखिये ये तीर का चिह्न बना हुआ है इसको सीधा रखकर मोहर लगायी जाती है। अब इतनी बड़ी गलती कर चुकी थी कि मैं खुद की सफाई में यह नहीं कह पाई कि मैंने तो चिह्न देखकर ही मोहर लगाई थी या यह कह लीजिये कि घबराहट में मैं खुद ही असमंजस में थी कि मैंने देखा था चिह्न या नहीं। इतना समझा कर दिनेश जी ने पृष्ठ के अंत में मोहर लगा दी और जैसे ही उन्होंने देखा कि मोहर इस बार भी उल्टी लग गयी थी वो आश्चर्य से बोल उठे, अरे ये कैसे हुआ मोहर तो यहाँ भी उल्टी लग गयी। फिर जब उन्होंने ध्यान से देखा तो वो मोहर ही उल्टी थी वह खुद भी हँस पड़े और मेरे चेहरे पर भी मुस्कुराहट आ गयी।

बाद में उन्होंने वही मोहर सीधी भी लगा दी पर इस पूरे वाक्या से मेरी नियुक्ति का पहला दिन और मेरी पहली सर्विस बुक के बारे में मैं जब भी सोचूंगी हमेशा मेरे मुख पर मुस्कान जरूर आएगी। हो सकता है उस दिन अगर मोहर लगाने में कोई गलती न हुई होती तो 30–35 साल बाद अपनी सर्विस बुक को देख कर मुझे उस दिन के बारे में कुछ याद आता और कुछ नहीं पर अब मैं जब भी अपनी सर्विस बुक और उसके प्रथम पृष्ठ को देखती हूँ या देखूंगी तो मुझे ये वाक्या याद आएगा और हमेशा एक हँसी मेरे चेहरे पर छोड़ जायेगा।

अनन्या लवानिया
(आशुलिपिक)

जुनून इंसान को असंभव से संभव की ओर ले जाने वाली शक्ति

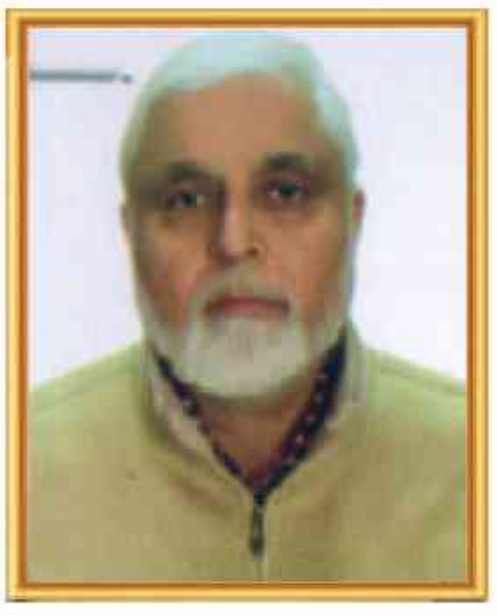

जुनून कोई साधारण भावना नहीं है! यह वह आग है जो इंसान के भीतर जलती है ! और उसे उसकी सीमाओं से आगे जाने के लिए मजबूर करती है जुनून वह शक्ति या ताकत है जो थके हुए कदमों में भी रफ्तार भर देता है। हार को भी चुनौती में बदल देता है और सपनों को हकीकत का रूप दे देता है। इतिहास गवाह है, कि जितने भी महान कार्य हुए हैं, उनके पीछे किसी न किसी पुरुष या स्त्री का गहरा जुनून छिपा रहा है, जब कोई इंसान अपने उद्देश्य को लेकर इतना प्रतिबद्ध हो जाता है, कि उसे न वक्त की फिक्र रहती है न परेशानियों का डर तब वह एहसास जुनून कहलाता है। यह केवल चाहत नहीं बल्कि आत्मा से निकली हुई पुकार होती है। अक्सर ही कहा जाता है, कि जुनून मेहनत और सफलता की चाबी है बिना जुनून के मेहनत भारी लगने लगती है जबकि जुनून के साथ की गई मेहनत आनंद बन जाती है। जुनूनी इंसान मुश्किल से मुश्किल कामों में हार नहीं मानता हर सफल व्यक्ति की कहानी में जुनून की झलक मिलती है। चाहे वह अब्दुल कलाम हो या विराट कोहली या सचिन तेंदुलकर जिन्होंने सीमित संसाधनों में भी बड़े सपने देखे और इन सभी की सफलता में जुनून था। जुनून

पांचाल

षष्ठम अंक (वर्ष 2026)

इंसान को असफल होने और डरने नहीं देता बल्कि उससे सीखने की शक्ति मिलती है जुनून एक सकारात्मक ताकत है आधा जुनून इंसान को अच्छाई और बुराई में अंतर करना भुला देता है इसलिए जरूरी है कि जुनून के साथ समाज में धैर्य और समझदारी जुड़ी हो क्योंकि आजकल देखा जा रहा है कि युवा की अवस्था जुनून से भरी है । यह युवाओं का जुनून सही रास्ते और सकारात्मक विचार के साथ जुड़ जाए तो वह न केवल अपना भविष्य सँवार सकते हैं बल्कि समाज और देश को भी नया रास्ता दिखा सकते हैं। जुनून वह आज है जो न तो बाजार में मिलता है और न ही खरीदा जा सकता है इसे अपने अंदर ही जगाना पड़ता है जब इंसान अपने जुनून को पहचान लेता है और उसे सही दिशा में लगा देता है तब वह सफलता, केवल एक मंजिल ही नहीं बल्कि जातीय परिणाम बन जाती है।
सफलता को छूना आसान हो गया जब हमने जुनून को अपना दोस्त बना लिया।

अलीम हुसैन
वरिष्ठ पासपोर्ट सहायक

आकांक्षा सक्सेना
पत्नी श्री विक्रांत श्रीवास्तव
वरिष्ठ पासपोर्ट सहायक

बेटी

धन्य है वह आंगन जिसमें जन्म लेती है बेटी,
महल बन जाती है वह कुटिया जिसे छू लेती है बेटी।
चिड़िया सी चहके आंगन आंगन, घर की रौनक है बेटी।

तितली सी कोमल कभी, कभी है वो सशक्तकुमारी,
चपला सी चंचल कभी, कभी है बहुत सयानी
शिक्षा, गुण, संस्कार रोप दो, तो सबल है बेटी,
सहारा दो गर विश्वास का तो पावन गंगाजल है बेटी।

बेटी है वह अद्भुत ज्योति, रोशन जिससे धरा है होती,
एक नहीं दो-दो घरों को सिंचित कर देती है बेटी।
मां की प्यारी सखी बन जाती, पिता को माँ सा दुलारती है बेटी।
छोटे बड़े कामों में सलाहकार बन जाती,
सही गलत की परख कराती है बेटी।

गर बेटा बनता पिता का कंधा, तो मां का सहारा बनती है बेटी।
बेटी कभी परायी नहीं, परायों के लिए भी अपनी बन जाती है बेटी।
अपने माता-पिता के कष्टों को चुटकी में कर देती है कम,
भाग्यवान हैं वह लोग जिनके घर जन्म लेती है बेटी।

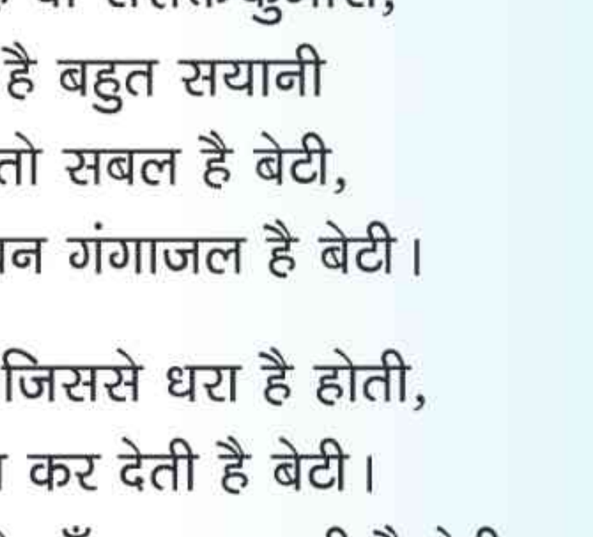

सरकारी नौकरी

वर्तमान समय में सरकारी नौकरी को प्रायः लोग स्थायी आय, सामाजिक सुरक्षा और सम्मान से जोड़कर देखते हैं निस्संदेह, ये सभी तत्व सरकारी सेवा से जुड़े हुए हैं, यद्यपि सरकारी नौकरी को यदि केवल रोजगार के सीमित दायरे में बाँध दिया जाए, तो इसके वास्तविक उद्देश्य और महत्व के साथ अन्याय होगा। वस्तुतः सरकारी नौकरी **एक व्यापक सामाजिक दायित्व, जनसेवा और राष्ट्र-निर्माण की प्रक्रिया** का अभिन्न अंग है।

सरकारी सेवक शासन और जनता के बीच सेतु का कार्य करता है। लोकतांत्रिक व्यवस्था में सरकार द्वारा निर्मित नीतियाँ, नियम और योजनाएँ तभी सार्थक सिद्ध होती हैं, जब उनका क्रियान्वयन निष्ठा, ईमानदारी और संवेदनशीलता के साथ किया जाए। इस दायित्व का निर्वहन सरकारी कर्मचारी करते हैं। इस दृष्टि से सरकारी नौकरी केवल व्यक्तिगत आय का साधन न होकर **लोकहित की सेवा का माध्यम** बन जाती है।

सरकारी सेवाएँ समाज के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित करती हैं। शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षक राष्ट्र की भावी पीढ़ी का निर्माण करते हैं और विद्यार्थियों में ज्ञान, संस्कार तथा नागरिक चेतना का विकास करते हैं। स्वास्थ्य सेवाओं से जुड़े चिकित्सक और कर्मचारी मानव जीवन की रक्षा कर समाज को स्वस्थ बनाए रखने में योगदान देते हैं। पुलिस और सुरक्षा बल समाज में शांति, व्यवस्था और कानून के शासन को सुनिश्चित करते हैं। वहीं प्रशासनिक, राजस्व और न्यायिक सेवाएँ शासन-प्रणाली को सुदृढ़ बनाकर आम नागरिक को न्याय और सुविधा प्रदान करती हैं। इसी तरह पासपोर्ट कर्मी पढ़ाई, दवाई, कमाई, पर्यटन एवं तीर्थाटन की इच्छा के साथ पासपोर्ट बनवाने आए इच्छुक लोगों की मदद करते हैं। इन सभी क्षेत्रों में सेवा-भाव सर्वोपरि होता है।

सरकारी नौकरी में कार्यरत व्यक्ति से अपेक्षा की जाती है कि वह अपने कर्तव्यों का पालन **निष्पक्षता, पारदर्शिता और संवैधानिक मूल्यों** के अनुरूप करे। उसे जाति, धर्म, भाषा, वर्ग या क्षेत्र के भेदभाव से ऊपर उठकर प्रत्येक नागरिक के साथ समान व्यवहार करना होता है। यही कारण है कि सरकारी सेवा को केवल पेशा नहीं, बल्कि **नैतिक और संवैधानिक उत्तरदायित्व** माना गया है।

इसके अतिरिक्त, सरकारी कर्मचारी विकास और कल्याणकारी योजनाओं को समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ग्रामीण विकास, सामाजिक सुरक्षा, महिला एवं बाल कल्याण, पर्यावरण संरक्षण और औद्योगिक प्रगति जैसे क्षेत्रों में सरकारी सेवाओं का योगदान देश की प्रगति की दिशा निर्धारित करता है। इस प्रक्रिया में सरकारी सेवक केवल आदेशों का पालनकर्ता नहीं, बल्कि **समाधानकर्ता और मार्गदर्शक** की भूमिका भी निभाता है।

सरकारी नौकरी राष्ट्र निर्माण का एक सशक्त माध्यम है। जब कोई कर्मचारी अपने कार्य को केवल दायित्व नहीं, बल्कि सेवा समझकर करता है, तो शासन में जनविश्वास बढ़ता है और सुशासन की स्थापना होती है। एक कर्तव्यनिष्ठ सरकारी सेवक समाज में अनुशासन, नैतिकता और जिम्मेदारी की भावना को प्रोत्साहित करता है।

इन सब बातों के साथ यह महत्त्वपूर्ण है कि हमें उपरोक्त मानदंडों पर अपने आपको जाँचना चाहिए कि क्या हम अपने दायित्वों का सही से निर्वहन कर पा रहे हैं या अपने को सेवक के बजाए मालिक की भूमिका में देखते हैं। इसी क्रम में यह तथ्य भी महत्त्वपूर्ण है कि हमें सरकारी संपत्ति और साख की रखवाली और सुरक्षा अपने व्यक्तिगत संपत्ति से बढ़कर करनी चाहिए।

अतः यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि सरकारी नौकरी मात्र रोजगार नहीं, न ही सरकारी नौकर अपने आपको मालिक समझे। बल्कि सरकारी नौकरी **जनसेवा, सामाजिक उत्तरदायित्व और राष्ट्र के प्रति समर्पण का पथ** है। जो व्यक्ति इस भावना के साथ सरकारी सेवा में प्रवेश करता है, वही सच्चे अर्थों में लोकसेवक कहलाता है और समाज तथा राष्ट्र के सर्वांगीण विकास में अपना अमूल्य योगदान देता है।

दिनेश सिंह
(सचिव, राजभाषा कार्यान्वयन समिति)

वक्त का आईना

बेजुबां हो गई है अब सच्चाई,
हर कोना डरा हुआ है परछाईं।
न्याय की गद्दी खुद बहक गई,
कोर्ट भी झूठ को सच कह गई।

वकील की जुबां भी अब बिकने लगी,
सच की जगह चालाकी टिकने लगी।
मजदूर को निकम्मा कहते हैं लोग,
श्रम का सम्मान अब खोने लगा संजोग।

आज की दुनिया आलसी कहे उसे,
जो दो जून की रोटी को तरसे।
जो मेहनत करे, वो शर्मिंदा है,
आरामतलबी का जमाना गर्विन्दा है।

हर मूषक खुद को शेर कहे,
झूठ का कद आसमान लांघे।
सच को गूंगा कर दिया गया है,
ईमान अब चुपचाप सा रह गया है।

चालाकियों का मेला लगा है,
ईमानदार अब तन्हा खड़ा है।
अंधेरों ने उजालों को घेरा,
प्रकाश का आँचल सिमटता गया है मेरा।

वैध इलाजों के हाथ बंधे हैं,
दर्द अब मनुष्यता की नसों में छिपे हैं।
डॉक्टर मजबूर, रोगी हैरान,
चुप है विज्ञान, मौन है जहान।

प्रकृति भी अब चकित है देख,
मानव ने खुद को कहाँ पहुँचा दिया एक एक रेख।
पेड़ों की साँसें घुटने लगीं,
नदियों की आँखें नम रहने लगीं।

धरती काँपती है, आसमान चुप है,
बोलती है तो बस प्रकृति की सिसकियाँ अब।
इंसान का खेल अब भयावह है,
मानवता की लाश पे ताज पहनाया गया है।

प्रियंबदा दुबे
ट्रेनर टी.सी.एस.

जैसा अन्न वैसा मन

एक बार एक ऋषि ने सोचा कि लोग गंगा में पाप धोने जाते है, तो इसका मतलब हुआ कि सारे पाप गंगा में समा गए और गंगा भी पापी हो गयी ! अब यह जानने के लिए तपस्या की, कि पाप कहाँ जाता है ? तपस्या करने के फलस्वरूप देवता प्रकट हुए, ऋषि ने पूछा कि भगवन जो पाप गंगा में धोया जाता है वह पाप कहाँ जाता है ?

भगवान ने कहा कि चलो गंगा से ही पूछते है, दोनों लोग गंगा के पास गए और कहा कि "हे गंगे मइया! लोग तुम्हारे यहाँ पाप धोते है तो इसका मतलब आप भी पापी हुई !"

गंगा ने कहा "मैं क्यों पापी हुई, मैं तो सारे पापों को ले जाकर समुद्र को अर्पित कर देती हूँ!"

अब वे लोग समुद्र के पास गए, "हे सागर ! गंगा जी पाप आपको अर्पित कर देती हैं तो इसका मतलब आप भी पापी हुए !" समुद्र ने कहा "मैं क्यों पापी हुआ, मैं तो सारे पापों को लेकर भाप बना कर बादल बना देता हूँ !"

अब वे लोग बादल के पास गए और कहा "हे बादलों ! समुद्र तो पापों को भाप बनाकर बादल बना देता है, तो इसका मतलब आप पापी हुए !"

बादलों ने कहा "मैं क्यों पापी हुआ, मैं तो सारे पापों को वापस पानी बरसा कर धरती पर भेज देता हूँ, जिससे अन्न उपजता है, जिसको मानव खाता है, उस अन्न में जो अन्न जिस मानसिक स्थिति से उगाया जाता है और जिस वृत्ति से प्राप्त किया जाता है, जिस मानसिक अवस्था में खाया जाता है, उसी अनुसार मानव की मानसिकता बनती है !" अन्न को जिस वृत्ति (कमाई) से प्राप्त किया जाता है और जिस मानसिक अवस्था में खाया जाता है, वैसे ही विचार मानव के बन जाते है ! इसीलिये सदैव भोजन सिमरन और शांत अवस्था में करना चाहिए और कम से कम अन्न जिस धन से खरीदा जाए वह धन ईमानदारी एवं श्रम का होना चाहिए ! जैसे– भीष्म पितामह शरशय्या पर पड़े प्राण त्यागने के लिए शुक्लपक्ष के आगमन की प्रतीक्षा कर रहे थे। भगवान श्री कृष्ण के आदेश पर युधिष्ठिर उनसे प्रतिदिन नीति ज्ञान लेते थे। द्रौपदी कभी नहीं जाती थीं। इससे भीष्म के मन में पीड़ा थी। श्री कृष्ण ने भांप लिया था। उन्होंने युधिष्ठिर से कहा–अंतकाल की प्रतीक्षा में साधनारत पूर्वज से सपरिवार मिलना चाहिए। परिवार पत्नी के बिना पूर्ण नहीं है। इशारा समझकर युधिष्ठिर जिद करके द्रौपदी को भी साथ ले गए। पितामह उन्हें नीति ज्ञान देने लगे। द्रौपदी कुंठित होकर चुपचाप सुन रही थी। अचानक द्रौपदी को हँसी आ गई।

भीष्म ने कहा– पुत्री तुम्हारे हँसने का कारण मैं जानता हूँ। सकुचाई द्रौपदी को भीष्म ने कहा– पुत्री तुम अपने मन की दुविधा पूछ ही लो। मुझे शांति मिलेगी।

द्रौपदी ने कहा– स्वयं भगवान श्री कृष्ण कहते हैं कि भीष्म के समान नीति का ज्ञाता दूसरा कोई नहीं किंतु आपका ज्ञान कहाँ लुप्त हो गया था जब पुत्रवधू आपके सामने निर्वस्त्र की जा रही थी ?

भीष्म ने कहा– इसी प्रश्न की प्रतीक्षा थी। जैसा अन्न वैसा मन। मैं दुर्योधन जैसे अधर्मी का अन्न खा रहा था। उस अन्न ने मेरी बुद्धि जड़ कर दी थी। सही निर्णय लेने की क्षमता खत्म हो गई थी।

अन्न ही रक्त का कारक है। अर्जुन के बाणों ने मेरे शरीर से वह रक्त धीरे–धीरे करके निकाल दिया है। अब इस शरीर में सिर्फ गंगापुत्र भीष्म शेष है। सिर्फ माता का अंश है जो सबको निर्मल करती हैं इसलिए मैं नीति की बातें कर पा रहा हूं।

भीष्म की बात को अटल सत्य समझिए। दुराचार से या किसी को सताकर कमाए गए धन से यदि आप परिवार का पालन करते हैं तो वह परिवार की बुद्धि भ्रष्ट करता है। उससे जो सुख है वह क्षणिक है किंतु लंबे समय में वह दुख का कारण बनता है। यदि आपके सामने गलत तरीके से पैसा कमाकर भी कोई फल–फूल रहा है तो यह समझिए कि वे उसके पूर्वजन्म के संचित पुण्य हैं जिसे निगल रहा है। जैसे ही वे पुण्य कर्म समाप्त होंगे, उसके दुर्दिन आरंभ होंगे।

जय श्री कृष्ण

रंजीत कुमार दास
सलाहकार

चुप ही रहो

अनगिनत हालातों में जब लग रहा था कि नहीं हूँ मैं गलत
मेरे हमकदम कई साथियों ने, ना दिया साथ, गए थे पलट,
उन हालातों में, मन के जज़्बातों ने, समझाया मुझे था कि
बात बन के ना बिगड़े, इसलिए 'चुप ही रहो'

मैं फिर भी बोली, मसले हुए, मेरी धज्जियां उड़ाई गई,
सही गलत की कसौटी का मुखौटा लगाकर,
मुझे चापलूसी सिखाई गई,
चाहे कोई समझे ना समझे, पर मुझे सच कहना है,
मौन नहीं रहना है,
तुम्हें ठीक लगे, तो संग बहो वरना 'चुप ही रहो'

बोलना होगा जरूरी तो तौल के ही बोलूंगी,
गर मांगेगा कोई मदद, अपनी झोली खोलूंगी,
तुम करो अनुमान अपने नफे नुकसान का,
तुम ही रखो दर्प, अपनी झूठी शान का,
चाहे मुझको तुम ना सुनो, कुछ ना कहो 'चुप ही रहो'

हो खबर कि 'आग लगनी है वहाँ'
सुन के भी है बे–खबर रहता जहां,
मर गया हो कोई सरे बाजार दिन दहाड़े,
या मिले कोई लाश, घर के पिछवाड़े,
आँखों पर बाँध कर पट्टी, कायरों सा मौन हो,
है फक्र, हूँ मैं नहीं उस भीड़ में,
तुम बने रहो सभ्य और 'चुप ही रहो'

प्रीति रानी
पूर्व कनिष्ठ पासपोर्ट सहायक

एक मेहनती बेटा

एक छोटे से गाँव में एक गरीब किसान रहता था। उसका एक ही बेटा था, जो बहुत मेहनती और समझदार था। किसान ने अपने बेटे को खेती करना सिखाया और उसे अपने खेत में काम करने के लिए कहा।

एक दिन बेटे ने सोचा कि क्यों न मैं अपने खेत में एक पेड़ लगाऊँ, जिससे हमें फल मिल सके। उसने एक छोटा सा पौधा लगाया और उसकी देखभाल करने लगा। वह रोज सुबह उठकर पौधे को पानी देता, उसकी पत्तियों को साफ करता और उसकी मिट्टी को गीला करता।

धीरे–धीरे पौधा बड़ा हुआ और उसमें फल लगने लगे। किसान और उसका बेटा बहुत खुश हुए और उन्होंने उस फल को बेचकर पैसे कमाए। उन्होंने उन पैसों से अपने घर की मरम्मत करवाई और कुछ नए कपड़े खरीदे। एक दिन, गाँव में एक बड़ा तूफान आया। तूफान ने गाँव के कई घरों को नुकसान पहुँचाया, लेकिन किसान का घर सुरक्षित रहा। किसान और उसका बेटा बहुत खुश हुए और उन्होंने सोचा कि यह सब उनके पेड़ की वजह से हुआ है, जिसने उनके घर को तूफान से बचाया था।

किसान ने कहा, 'बेटा, तुम्हारी मेहनत और सोच ने हमें फल दिया है। हमेशा याद रखो, मेहनत और समझदारी से ही सफलता मिलती है।'

बेटा बोला, 'पिताजी, मैंने कुछ नहीं किया, बस अपने दिल की बात सुनी और मेहनत की।'

कहानी का संदेशः मेहनत और समझदारी से ही सफलता मिलती है।

अब्दुल समद
पुत्र श्री अलीम हुसैन
वरिष्ठ पासपोर्ट सहायक

पैसों की असली कीमत

मोहन जब छोटा था, तब उसके घर में कई बार खाना भी पूरा नहीं बन पाता था। स्कूल की फीस भरने में भी परेशानी होती थी। एक दिन उसने अपनी माँ को रोते हुए देखा क्योंकि उनके पास दवा के पैसे नहीं थे। उसी दिन मोहन ने मन में ठान लिया "मुझे बस पैसे कमाने हैं, बहुत सारे पैसे।"

उसने पढ़ाई में खूब मेहनत की, नौकरी पाई, फिर व्यापार शुरू किया। वह बहुत बुद्धिमान था, इसलिए जल्दी ही सफल भी हो गया।

मोहन सुबह से रात तक सिर्फ काम करता। उसे परिवार, दोस्तों या त्योहारों से कोई मतलब नहीं था। उसकी पत्नी सुनीता कई बार कहती,

"थोड़ा समय हमें भी दे दीजिए।"

लेकिन मोहन का एक ही जवाब होता,

अभी मेहनत का समय है, पैसे होंगे तो सब होगा।

उसके बच्चे भी उससे दूर होते गए। स्कूल के कार्यक्रमों में वह कभी नहीं गया। जन्मदिन पर भी वह अक्सर मीटिंग में व्यस्त रहता।

मोहन का बैंक बैलेंस बढ़ता गया, लेकिन उसके घर में हँसी कम होती गई। उसने हर चीज को पैसों से तोलना शुरू कर दिया। अगर कोई रिश्तेदार मदद माँगता, तो वह सोचता इससे मुझे क्या फायदा होगा ?

एक दिन उसके पुराने दोस्त रमेश ने कहा, पैसा जरूरी है, पर पैसा सब कुछ नहीं। तू बदल गया है।

मोहन ने हँसते हुए जवाब दिया,

"दुनिया पैसे से चलती है, दोस्ती से नहीं।"

समय बीता। मोहन बहुत अमीर हो गया। उसके पास बड़ी गाड़ी, आलीशान घर और कई फैक्ट्रियाँ थीं। लेकिन उसके बच्चे बड़े होकर विदेश चले गए। पत्नी भी उससे मन से दूर हो गई। घर में सब कुछ था सिवाय अपनापन के।

एक दिन मोहन को अचानक दिल का दौरा पड़ा। वह अस्पताल के कमरे में अकेला पड़ा था। उसके पास पैसे तो बहुत थे, लेकिन उस समय उसके साथ बैठने वाला कोई अपना नहीं था। फोन पर सबने हाल-चाल पूछा, पर कोई तुरंत नहीं आ पाया।

उस रात उसने पहली बार सोचा

"मैंने जीवन में क्या पाया और क्या खोया ?"

ठीक होने के बाद मोहन ने अपने पुराने एल्बम देखे। बच्चों की बचपन की तस्वीरें, पत्नी की मुस्कान, दोस्तों के साथ बिताए पल सब कुछ उसकी आँखों के सामने था। उसे एहसास हुआ कि उसने पैसों के पीछे भागते-भागते असली खुशी खो दी।

उसने धीरे-धीरे अपने काम का बोझ कम किया। परिवार के साथ समय बिताना शुरू किया। गरीब बच्चों की पढ़ाई के लिए दान दिया। अब वह पैसों को जीवन का साधन मानता था, उद्देश्य नहीं।

मोहन की कहानी हमें यह सिखाती है कि पैसा जरूरी है, पर रिश्तों से बड़ा नहीं।

अगर हम केवल धन के पीछे भागेंगे, तो शायद बहुत कुछ कमा लेंगे, पर जीवन की असली खुशियाँ खो देंगे।

और अंत में मोहन अक्सर कहा करता था

"पैसा जेब में अच्छा लगता है, दिल में नहीं।"

मिथुन कुमार
वरिष्ठ पासपोर्ट सहायक

खामोशी का श्रम

तू कर मेहनत खामोशी से, तेरा श्रम बोल जाएगा,
सफलता जब आएगी, जमाना शोर मचाएगा।

जो वक्त तूने झोंका है, हर बूँद जो पसीने की,
यही तो कहानी है, तेरे नसीब के बनने की।

न देख आराम किसी का, न सुन बहाना कोई,
जो सोने में गुजरी रातें, वो रोशनी कहाँ खोई ?

कलम की ताकत हो या, हो फावड़े का जोर,
बिना रगड़ के कभी, न बदला है किसी का दौर।

माना कि पथ है अँधेरा, और मंजिल दूर खड़ी,
पर हिम्मत की मशाल लिए, चलता जा घड़ी-घड़ी।

कमजोरी को अपनी तू, ताकत में बदल दे,
हर चुनौती को हँसकर, अपने कदमों से कुचल दे।

ईंट बनकर लग जा, तू नींव के उस कोने में,
जिसको देखे न कोई, पर भार सहे अकेले में।

क्योंकि भव्य इमारत की, वो ही सच्ची पहचान है,
तेरा मौन परिश्रम ही, तेरा सबसे बड़ा सम्मान है।

श्रेय कृष्ण सक्सेना
(डाटा एंट्री ऑपरेटर)

मुझको खुश रहने का हक है

मुझको खुश रहने का हक है,
मुझको खुशहाली से भर दो,
दो बोल प्यार से बोलो या फिर झूठी तारीफें ही कर दो,
इस उत्थान पतन के खेल में, हर कोई विजेता कैसे हो ?
जनता की ये भीड़ है मालिक, हर कोई नेता कैसे हो ?
इसका मतलब ये नहीं है, कि हम नाकारा हैं निकले,
कुछ न करने का मतलब, क्या हम आवारा हैं निकले ?
चाह हमें भी थी कि इक दिन, हम भी कुछ महान बनें,
आसमान से तारे तोड़ें, ऐसे शक्तिमान बनें,
पर हालातों की जंजीरें, इतना कसके जकड़े थीं,
सबकी आस और उम्मीदें, जोरों से मुझको पकड़े थीं,
इस जीवन की भागदौड़ में, शायद पीछे छूट गए,
मुझसे बांधे जो सपने थे, शायद सबके टूट गए,
कोशिश किसने देखी मेरी, कि कैसे इंसान बने ?
चाह सभी को थी मुझसे, कि ये भी भगवान बने,
बस, और नहीं मुझको अब, उन असफलताओं का डर दो,
बहुत थक चुका जीवन में, कोई तो मुझको कदर दो,
मुझको खुश रहने का हक़ है, मुझको खुशहाली से भर दो,
दो बोल प्यार से बोलो या फिर, झूठी तारीफें ही कर दो,

अनुराग दुबे
पूर्व कनिष्ठ पासपोर्ट सहायक

आधुनिक जीवन में योग की भूमिका

तनाव से समाधान तक

योगः चित्तवृत्ति निरोधः योग से चित्त की वृत्तियों का निरोध अथवा दूर किया जाता है।

परिचय– आज की तेज तर्रार जीवनशैली में मानसिक तनाव, थकान, नींद की कमी हार्मोन अंसतुलन और शारीरिक दर्द आम हो चुके हैं। ऐसे समय में योग केवल व्यायाम नहीं, बल्कि तनाव प्रबंधन, मानसिक संतुलन और स्वास्थ्य सुधार का सबसे प्रभावी प्राकृतिक और वैज्ञानिक तरीका बन गया है। योग प्राचीन भारतीय विरासत है। लेकिन इसका महत्व आधुनिक युग में पहले से कहीं अधिक बढ़ गया है।

तनाव का बढ़ता स्तर :– आधुनिक जीवन की चुनौतीः काम का दबाव, रिश्तों का तनाव, डिजिटल स्क्रीन का अत्यधिक उपयोग और अनियमित जीवनशैलीः इन सभी ने व्यक्ति को मानसिक तनाव और भावात्मक रूप से थका दिया है।

WHO के अनुसारः– तनाव और चिंता 21 वीं सदी की सबसे बड़ी स्वास्थ्य समस्याएँ मानी जा रही है। ऐसी परिस्थिति में योग, मन और शरीर दोनों को गहराई से प्रभावित करता है।

योगः तनाव कम करने का वैज्ञानिक तरीकाः योग तनाव को निम्न 3 स्तरों पर कम करता है।

1. शारीरिक स्तर पर –

- मॉंसपेशियों की जकड़न कम करता है।
- रक्तसंचार बेहतर करता है।
- हृदय गति स्थिर करता है।
- शरीर में ऊर्जा प्रवाह बढ़ता है।

2. मानसिक स्तर पर

- Cartisal (Stress Harmone) कम होता है।
- नकारात्मक विचार दूर होते हैं।
- Anxiety और Restlessness घटती है।
- एकाग्रता और स्पष्टता बढ़ती है।

3. भावनात्मक स्तर पर

- मन को गहरी शान्ति मिलती है।
- मन स्थिर एवं सकारात्मक बनता है।
- आत्म विश्वास बढ़ता है।

आधुनिक जीवन में योग कैसे काम करता हैः–

1. तनाव और मानसिक थकान के लिए – अनुलोम–विलोम, भ्रामरी और ध्यान तुरन्त तनाव को दूर करते हैं।

2. कमर और गर्दन दर्द (Desk job problem) – कैट–काउ, शुजंगासन, टिविस्ट और बालासन कंम्प्यूटर पर काम करने वालों के लिए वरदान है।

3. नींद की कमी (Insomnia) – योग निद्रा, श्वसन अभ्यास और शवासन नींद सुधारने में अत्यन्त लाभकारी है।

4. डाइबिटीज का प्रबंधन – प्राणायाम, सूर्य नमस्कार, भुजंगासन, वक्रासन, अर्थ मत्स्येंद्रासन, धनुरासन अत्यन्त प्रभावी होते हैं।

योग के 5 सबसे प्रभावी अभ्यास (Stressfree Life)

1. अनुलोम विलोम प्राणायाम
मन को तुरन्त शान्त करता है, दिमाग में ऑक्सीजन बढ़ाता है।

2. भ्रामरी प्राणायाम
तनाव और मस्तिष्क की थकान कम करने में सबसे असरदार।

3. माजरी–व्यम्रासन (Cat-Cow)
रीढ़ की हड्डी को लचीली बनाता है। पूरी बॉडी को फ्रेश करता है।

4. बालासन (Child pose)
तनाव, चिंता और मानसिक उलझन को तुरन्त शान्त करता है।

5. ध्यान (Meditation)
मानसिक ऊर्जा बढ़ाता है। एकाग्रता को स्थिर करता है।

आज जब दुनिया तनाव से जूझ रही है– योग एक ऐसा समाधान है जो

- दवा नहीं
- कोई साइड इफेक्ट नहीं
- हर उम्र का व्यक्ति कर सकता है।
- और परिणाम निश्चित देता है।

श्वेताश्वतरोपनिषद के अध्याय 2, श्लोक 12 में लिखा है :–

न तस्य रोगो न जरा न मृत्युः प्राप्तस्य योगाग्निमयं शरीरम् ।।

अर्थात, जो व्यक्ति योगरूपी अग्नि में अपने शरीर को तपा लेता है या योगासक्त हो जाता है तो उसे रोग, वृद्धावस्था और असामयिक मृत्यु का डर नहीं रहता। योगाभ्यास से शरीर को विशेष आन्तरिक ऊर्जा प्राप्त होती है।

श्रीमद भगवद्गीता में :–

युक्ताहार विहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु ।
युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा ।।

यथायोग्य आहार–विहार करने वाले, कर्मों में यथायोग्य चेष्टा करने वाले और यथायोग्य सोने तथा जगने वाले का योग सिद्ध होता है जिससे सम्पूर्ण दुखों का नाश होता है।

निष्कर्ष –

आधुनिक जीवन में चुनौतियाँ बढ़ रहीं है। लेकिन समाधान भी हमारे पास है। –

योग –यह सिर्फ व्यायाम नहीं, बल्कि एक जीवनशैली है, जो तनाव को नियंत्रित करती है।

और जीवन को समृद्ध, शांत और संतुलित बनाता है। जो व्यक्ति प्रतिदिन 15-20 मिनट भी योग करता है। उसका जीवन न केवल तनाव मुक्तहोता है बल्कि मेंटल क्लैरिटी, ऊर्जा, स्वास्थ्य और खुशहाली से भर जाता है।

– योग वास्तव में आधुनिक युग की आवश्यकता है।

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामया।।

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चित् दुःख भाग्भवेत।।

श्रीमती रेखा
पत्नी श्री धर्मवीर सिंह
वरिष्ठ अधीक्षक

विश्वास

जीतना है जीवन में अगर
रखना पड़ेगा प्रतिपल विश्वास
बल मिलेगा धैर्य का हर पल
जीत की कुंजी रहेगी सदैव पास

विश्वास देता है चिंता से मुक्ति
भ्रम की स्थिति में प्रदान करता युक्ति
सर्द हवा में दीप जलाकर
जीत की देता सुदृढ़ आस
जीतना है जीवन में अगर
रखना पड़ेगा प्रतिपल विश्वास

नकारात्मकता को सकारात्मकता में करता परिवर्तित
सदैव करता हर प्राणी का हित
दुख की भीषण अग्नि के सम्मुख
देता सुख की ठंडक का अहसास
जीतना है जीवन में अगर
रखना पड़ेगा प्रतिपल विश्वास

असाध्य लक्ष्य को करता साध्य
समस्या को झुकने को करता बाध्य
डूबते को देता तिनके का सहारा
हारे को देता 'जीत का तोहफा' खास
जीतना है जीवन में अगर
रखना पड़ेगा प्रतिपल विश्वास
बल मिलेगा धैर्य का हर पल
जीत की कुंजी रहेगी सदैव पास

श्रीमती हेमा
पत्नी श्री राजेश कुमार
(वरिष्ठ पासपोर्ट सहायक)

बिना गणित के सब सूना है, हर रिश्ता एक नमूना है,

घट जाओ मुझसे शून्य बने
जुड़ जाओ तो ताकत है
भाग करोगी बँट जाओगी,
गुणा में झगड़ा जायज है,

कभी ना करना अवकलनों को,
समाकलन फलदायक है,
अल्फा, बीटा, गामा, थीटा,
ये सब तो नाजायज है
बिना जुड़े कुछ कर ना पाते,
कहीं जोड़ दो, ताकत है,

ज्या, कोज्या, स्पर्शज्या और
इन्ही के उलटे देखो
सभी नाम के रह जायँगे
अगर कोई ना जुड़ा हों इनमे,
तो! इनका मतलब खतम ही समझो।

कभी-कभी तो झुकना सीखो,
कहाँ मेल है सम किरणों का,
कभी कहीं पर रुकना सीखो,
कहाँ अंत है रेखाओं का,

कभी बिंदु सी बनो अटल तुम,
बिना तुम्हारे कहाँ शुरू कुछ,
जहाँ लगो सब शून्य ही कर दो,
जहाँ हटो सब सूना कर दो,
कभी चरों में मेल करा दो,
कभी अचर में गुणा ही कर दो।

कभी कभी तुम बनो ठहरना,
वाक्य अंत में जैसे बिंदु,
कभी जाति से बनो नदी तुम,
जैसे सर में पहने सिंधु।
माँग का होना ,
मांग को भरना,
अंतर बस ठहराव का है,
एक जगह तो प्रेम छुपा है,
एक जगह बदलाव का है।

कभी कभी तुम बनो वृत्त सी,
जहां शुरू हों वही खतम हों,
कभी कभी तुम बनो केंद्र सी,
बस बैठ वृत्त के मध्य बिंदु पर,
चारों ओर घूमते देखो।

कभी बनो तुम भुजा त्रिभुज की,
जहाँ हटो गुण आधे कर दो,
जहाँ जुड़ो अंत को भर दो,
कभी कभी तुम रुकना सीखो,
कभी कभी तुम झुकना सीखो..
या रुक जाओ या झुक जाओ,
मेल तभी ही संभव है,
मेल रहा असंभव है।

कभी शून्य सी बनो ठहरना,
कभी बनो पूर्ण संख्या,
शुरू शून्य से होता सब कुछ,
अंत में सब होता अनंत है,

कभी बनो तुम वृहत कोण सी,
अपनी सीमा पार ही कर दो,
कभी बनो चक्रीय चतुर्भुज,
सम्मुख जोड़ बराबर कर दो,

यहीं गणित है हम दोनों की,
यहीं असलियत, हम दोनों की,
पूरा रिश्ता गणित ही है,
वरना सब कुछ घृणित ही है।

बिंदु अकेला क्या कर पायेगा,
रेखा किरण कहाँ जाएगी,
जब तक इनका मेल ना होगा,
जब तक इनमे कोण ना होगा,

जब तक इनका मेल ना होगा,
तब तक प्रेम असंभव है, तब तक
प्रेम असंभव है।

सुमित कुमार
पूर्व कनिष्ठ पासपोर्ट सहायक

गंगा नदीः आस्था, जीवन और जिम्मेदारी

भारत की पहचान अगर किसी एक धारा से जुड़ी है, तो वह है गंगा। गंगा केवल एक नदी नहीं, बल्कि करोड़ों भारतीयों की आस्था, संस्कृति और जीवन का आधार है। प्राचीन ग्रंथों से लेकर आज की आधुनिक सभ्यता तक, गंगा ने भारत की आत्मा को सींचा है। सदियों से यह नदी सभ्यताओं को जन्म देती आई है, लेकिन आज वही गंगा हमारी लापरवाही के कारण संकट में है।

गंगा का उद्‌गमः

गंगा का उद्‌गम उत्तराखंड के हिमालय में स्थित गंगोत्री ग्लेशियर के गौमुख से होता है। यहाँ से निकलने वाली धारा को भागीरथी कहा जाता है। देवप्रयाग में अलकनंदा से संगम के बाद यह पवित्र धारा 'गंगा' कहलाती है। लगभग 2525 किलोमीटर की यात्रा करते हुए गंगा उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड और पश्चिम बंगाल से होकर बहती है और अंत में बंगाल की खाड़ी में मिल जाती है।

गंगा का महत्वः

गंगा का महत्व बहुमुखी है धार्मिक, सांस्कृतिक और आर्थिक। हिंदू धर्म में इसे 'माँ गंगा' कहा जाता है और गंगा स्नान को मोक्षदायी माना जाता है। हरिद्वार, प्रयागराज और वाराणसी जैसे तीर्थ इसके तट पर बसे हैं। इसके अलावा गंगा भारत के सबसे उपजाऊ मैदानों को जीवन देती है। करोड़ों किसान, मछुआरे और व्यापारी इसकी धारा पर निर्भर हैं। भारत का इतिहास, साहित्य और लोकजीवन गंगा के बिना अधूरा है।

गंगा क्यों प्रदूषित हो रही है?

आज गंगा दुनिया की सबसे प्रदूषित नदियों में से एक है। इसका प्रदूषण किसी एक कारण से नहीं, बल्कि कई परतों वाली समस्या है।

1. शहरों का सीवेज–सबसे बड़ा कारण

गंगा किनारे बसे 100 से अधिक शहर प्रतिदिन करोड़ों लीटर गंदा पानी नदी में छोड़ते हैं। कई जगह सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट की क्षमता कम है। जहाँ प्लांट बने हैं, वहाँ बिजली या रखरखाव की समस्या रहती है। छोटे कस्बों में सीवेज सिस्टम ही नहीं है,
परिणामः नदी का पानी जैविक रूप से सड़ने लगता है और बैक्टीरिया तेजी से बढ़ते हैं।

2. औद्योगिक प्रदूषण– अदृश्य जहर

गंगा बेसिन में चमड़ा उद्योग, केमिकल फैक्ट्री, टेक्सटाइल मिल और अन्य उद्योग जहरीले रसायन नदी में छोड़ते हैं। ये पानी को केवल गंदा ही नहीं, बल्कि विषैला बना देते हैं और कैंसर तक का खतरा बढ़ाते हैं। कई कारखानों का रासायनिक अपशिष्ट बिना शुद्धिकरण के गंगा में छोड़ा जाता है।

3. प्लास्टिक प्रदूषण

पॉलीथीन, बोतलें, पैकेजिंग वेस्ट और सिंगल-यूज प्लास्टिक बड़ी मात्रा में गंगा में पहुँचता है। यह न केवल पानी बल्कि जलीय जीवों के लिए भी घातक है। समस्या यह है कि प्लास्टिक सैकड़ों साल तक नहीं गलता है। यह माइक्रोप्लास्टिक बनकर पानी और मछलियों में घुल जाता है अंततः यही मानव शरीर तक पहुँच जाता है।

4. जनसंख्या और अनियोजित विकास

गंगा बेसिन दुनिया के सबसे घनी आबादी वाले क्षेत्रों में से एक है। बढ़ती आबादी, अनियोजित शहर और कचरा प्रबंधन की कमी ने स्थिति को और गंभीर बना दिया है।

5. कृषि से आने वाला रासायनिक बहाव

खेतों में इस्तेमाल होने वाले उर्वरक और कीटनाशक बारिश के साथ बहकर नदियों में आ जाते हैं। इससे पानी में नाइट्रोजन और फॉस्फोरस बढ़ता है। शैवाल तेजी से फैलते हैं और पानी में ऑक्सीजन कम हो जाती है और मछलियाँ मरने लगती हैं।

क्या केवल सरकार जिम्मेदार है?

गंगा को बचाना केवल सरकार का काम नहीं – यह समाज और व्यक्ति दोनों की जिम्मेदारी है। सरकार ने 'नमामि गंगे' जैसी बड़ी योजनाएँ शुरु की हैं, जिनसे कुछ क्षेत्रों में सुधार हुआ है। लेकिन गंगा जितनी विशाल है, उतनी ही बड़ी जिम्मेदारी भी है। इसे बचाने के लिए जनता की भागीदारी अनिवार्य है। यदि हर स्तर पर छोटे-छोटे कदम उठाए जाएँ, तो बड़ा बदलाव संभव है।

1. व्यक्तिगत स्तर पर बदलाव

- नदी या नालों में कचरा फेंकना पूरी तरह बंद करें
- कपड़े के थैले और स्टील बोतलें अपनाएँ
- घर का कचरा अलग-अलग (सूखा/गीला) करके दें

छोटी आदतें सामूहिक रूप से बड़ा प्रभाव डालती हैं।

3.जिम्मेदार पर्यटन

गंगा तट पर घूमने जाते समय कचरा पीछे न छोड़ें, घाटों की स्वच्छता बनाए रखें, दूसरों को भी ऐसा करने के लिए प्रेरित करें।

पर्यटन स्वच्छ होगा तो घाट भी स्वच्छ रहेंगे।

2. पूजा और परंपराओं में सुधार

आस्था को बनाए रखते हुए प्रदूषण कम किया जा सकता है:

- फूलों को खाद बनाने या कलेक्शन बॉक्स में देना।
- मिट्टी या बायोडिग्रेडेबल मूर्तियों का उपयोग करना।

4. प्लास्टिक मुक्त जीवनशैली

- सिंगल-यूज प्लास्टिक से बचें।
- लोकल दुकानों पर थैला साथ ले जाएँ।

5. सामुदायिक भागीदारी

- नदी सफाई अभियानों में भाग लें।
- स्कूलों और समाज में जागरूकता कार्यक्रम करें।
- NGO या स्थानीय समूहों से जुड़ें। जब समाज जुड़ता है, तो बदलाव तेज होता है।

निष्कर्ष

गंगा केवल एक नदी नहीं, हमारी पहचान और भविष्य की धारा है। हमने इसे माँ कहा है, लेकिन अब समय है माँ की सेवा करने का।

यदि आज हम नहीं जागे, तो आने वाली पीढ़ियाँ गंगा को केवल किताबों में देखेंगी।

अभिषेक पटेल (डाटा एंट्री ऑपरेटर)

माँ के बिना घर, घर नहीं होता

माँ के बिना घर, घर नहीं होता है,
दीवारें है, पर दिल नहीं होता है।

आज भी याद है मुझे,
कि जब मैं पिछली बार माँ के पास आया था,
सबसे पहले तूने मुझे ममता के गिलास में पानी पिलाया था,
बड़े प्यार से बुलाकर मुझे अपने पास बैठाया था,
फिर बोली तू मुझे बहुत याद आया था,
तूने जब भी फोन मिलाया था मेरा दिल भर आया था।

खिसक गई पैरों तले जमीन कुछ भी समझ नहीं आया था,
माँ हॉस्पिटल में हैं जब ये मुझे बताया था,
माँ को देख मैं खुद को ना रोक पाया था
यहां सब सही है बहन को बताया था,
दूसरी तरफ माँ की शव एंबुलेंस में रखवाया था।

माँ तेरे बिना अब घर, घर नहीं लगता
माँ तेरे बिना घर, घर नहीं होता।।

आज भी जब मै घर से वापस आता हूँ,
मुड़ मुड़ के घर का गेट निहारता हूँ,
कि पीछे से माँ आती होगी,
मुट्ठी में दबाकर कुछ रुपए लाती होगी,
बोलेगी पैसे मुझे देकर,
जब नौकरी लगेगी तब माँगूँगी दस गुने लेकर।।

देखकर माँ का फोटो आज भी आँखे है भर आती,
सोचता हूँ कि कहाँ चली गई मेरी माँ
उसे मेरी याद नहीं आती।
माँ तू अपने बेटे से अब क्यों नहीं मिलने आती।
सब कुछ है माँ पर फिर भी तेरे गोद जैसा सुकून नहीं मिलता

अब तो यह सब याद करके ही रोता,
माँ के बिना घर घर नहीं होता।

दिलीप सिंह
(एस.टी.सी.)

वे कहते हैं मैं बदल गई

वे कहते हैं मैं बदल गई
जैसे मुझे हमेशा एक-सा ही रहना था।
जैसे मेरा संभलना उनका हक था।
जैसे बढ़ना कोई गुनाह हो,
जैसे मेरी खुशी, वो बात थी,
जो उन्होंने कभी सोचा ही नहीं।

उन्हें वो रूप याद आता है
जो हवा की तरह झुक जाता था।
वह एक लड़की,
जो हर बात पर हाँ कर देती थी
और अनजान बनी रहती थी।
चुप रहती थी,
जबकि खुद सही होती थी।
माफी माँग लेती थी,
चाहे इस बार उसके लड़ने की बारी ही क्यों न हो।

मैंने सीखा कि खामोशी ही शांति नहीं होती।
मेरी चुप्पी तूफान को नहीं रोक सकती।
मैंने अपनी आवाज पाई
मैंने एक लौ जगाई।
और फिर अचानक
मैं पहले जैसी नहीं रही।

मैंने खुद को चुना,
और हाँ... ये दिखाता है-
मेरी अपनी सीमायें है और
बन्दिशे मुझे नहीं रोक सकती
अगर यही बदलाव है-
तो दोष मैं स्वीकार करती हूँ।

मैंने खुद को खोया नहीं
मैंने खुद को फिर से पाया है

रिद्धि सिंह
पुत्री श्री दिनेश सिंह

सफलता एक अंतहीन दौड़

एक छोटे से शहर में अर्जुन नाम का एक लड़का रहता था। बचपन से ही उसने अपने घर में एक ही बात बार-बार सुनी थी

''अच्छी नौकरी ही असली सफलता है।''

उसके पिता एक सरकारी दफ्तर में क्लर्क थे और हमेशा कहते, ''बेटा, अगर सरकारी नौकरी मिल जाए तो जिंदगी बन जाएगी।''

अर्जुन ने इन शब्दों को ही अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया।

अर्जुन पढ़ाई में ठीक-ठाक था, लेकिन उसकी रुचि किताबों से ज्यादा चित्रकला और संगीत में थी। जब भी वह पेंटिंग बनाता, उसकी आँखों में चमक आ जाती। लेकिन जैसे-जैसे वह बड़ा हुआ, घर और समाज का दबाव बढ़ता गया।

''इंजीनियर बनो।''

''सरकारी परीक्षा की तैयारी करो।''

''नौकरी ही सब कुछ है।''

धीरे-धीरे अर्जुन ने अपने शौक छोड़ दिए और सिर्फ प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में लग गया।

कॉलेज खत्म होते ही उसने एक के बाद एक परीक्षा दी। कभी इंटरव्यू में रह गया, कभी लिखित परीक्षा में। हर असफलता उसे और बेचैन कर देती। वह दिन-रात पढ़ता, दोस्तों से मिलना बंद कर दिया, त्योहार मनाना छोड़ दिया।

जब भी कोई पूछता, "कैसे हो ?''

वह बस एक ही जवाब देता

"बस नौकरी लग जाए, फिर सब ठीक हो जाएगा।''

लेकिन "सब ठीक'' कभी आता ही नहीं था।

आखिरकार कई सालों की मेहनत के बाद अर्जुन को एक बड़ी कंपनी में नौकरी मिल गई। परिवार खुश था, रिश्तेदार बधाई दे रहे थे। उसे लगा अब वह सफल हो गया है।

लेकिन ऑफिस की जिंदगी उसकी कल्पना से अलग थी। सुबह से देर रात तक काम, अवैध तरीकों से कमाई, लगातार तनाव, और लक्ष्य पूरा करने की होड़। उसे सैलरी तो अच्छी मिल रही थी, पर मन खाली था।

वह अक्सर सोचता

"क्या यही सफलता है ? सिर्फ पैसे कमाना ?''

एक दिन ऑफिस की मीटिंग में उसके बॉस ने कहा,

"यहाँ भावनाओं की नहीं, परिणाम की कीमत है।''

यह सुनकर अर्जुन को झटका लगा। उसे याद आया कि कभी वह रंगों से दुनिया सजाने का सपना देखता था। अब वह एक्सेल शीट और रिपोर्टों में उलझ गया था।

उसने महसूस किया कि उसने कभी खुद से पूछा ही नहीं कि वह सच में क्या चाहता है। उसने बस समाज की परिभाषा को ही अपनी सच्चाई मान लिया था।

एक शाम वह अपने पुराने स्कूल गया, जहाँ वार्षिक कला प्रदर्शनी चल रही थी। बच्चों की बनाई पेंटिंग्स देखकर उसका दिल भर आया। एक शिक्षक ने उसे पहचान लिया और कहा,

"अर्जुन, तुम्हारी पेंटिंग्स आज भी हमारे स्टोर रूम में रखी हैं। तुम बहुत प्रतिभाशाली थे।"

यह सुनकर उसके अंदर कुछ टूट गया और कुछ नया जन्म भी ले लिया।

उस रात उसने पहली बार खुद से सवाल किया

"क्या सफलता सिर्फ नौकरी है ? या अपने सपनों को जीना भी सफलता है ?"

कुछ महीनों तक सोचने के बाद अर्जुन ने एक साहसिक फैसला लिया। उसने नौकरी छोड़ी नहीं, लेकिन अपने समय का संतुलन बनाया। वीकेंड पर बच्चों को पेंटिंग सिखाने लगा। धीरे-धीरे उसने एक छोटा आर्ट स्टूडियो शुरू किया।

अब वह पहले से कम कमाता था, लेकिन ज्यादा मुस्कुराता था।

उसे समझ में आ गया कि सफलता का अर्थ सिर्फ नौकरी, पैसा या पद नहीं है।

सफलता वह है जहाँ आपका मन संतुष्ट हो, जहाँ आप अपनी पहचान खोएँ नहीं, बल्कि उसे जीएँ।

अर्जुन की कहानी हमें सिखाती है कि

नौकरी जरूरी है, पर वही सफलता नहीं।

अगर हम बिना सोचे-समझे भीड़ के पीछे भागेंगे, तो शायद मंजिल मिल जाए, पर खुद को खो देंगे।

सच्ची सफलता वही है जहाँ काम और खुशी दोनों साथ चलें।

सिद्धार्थ प्रताप सिंह
यंग प्रोफेशनल

आई.टी.बी.पी. एवं पासपोर्ट कार्यालय द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित स्वच्छता पखवाड़ा, वन्दे मातरम् कार्यक्रम के छायाचित्र

पांचाल

षष्ठम अंक (वर्ष 2026)

कार्यालय द्वारा आयोजित हर-घर तिरंगा यात्रा के छायाचित्र

पासपोर्ट समाचार

पासपोर्ट के आवेदन में स्पष्ट भरें पूरा विवरण, अपने पुलिस स्टेशन का लिखें नाम, क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी ने पाठकों के सवालों के दिए जवाब

कोर्ट की एनओसी पर बन सकता है पासपोर्ट, एक्सपायर होने पर नया नहीं, रि-इश्यू का भरें विकल्प

प्रश्न पहर

पासपोर्ट के लिए कैसे करें आवेदन

राज्यमंत्री विदेश मंत्रालय कीर्ति वर्धन ने बरेली के पासपोर्ट अधिकारियों को सम्मानित किया।

क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय पुरस्कृत

बरेली। विदेश मंत्रालय द्वारा प्रति वर्ष 10 जनवरी को मनाए जाने वाले विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर इस वर्ष कार्यक्रम का आयोजन नौ जनवरी शुक्रवार को किया गया। इस अवसर पर विदेश मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रणाधीन क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए क्षेत्रवार पुरस्कार प्रदान किए गए। क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, बरेली को 'क' क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ कार्यालय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार पासपोर्ट अधिकारी शैलेन्द्र सिंह, प्रशासनिक अधिकारी दिनेश सिंह ने नई दिल्ली में राज्य मंत्री विदेश मंत्रालय कीर्ति वर्धन सिंह से प्राप्त किया।

21 फरवरी को विशेष अभियान जारी किए ऑनलाइन अपॉइंटमेंट

संवाद न्यूज एजेंसी

वेबसाइट पर उपलब्ध कराया गया विवरण, हिंदी कार्यशाला भी होगी

बरेली। क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय की ओर से 21 फरवरी को विशेष अभियान का आयोजन किया जाएगा। इस अभियान के तहत क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय व इसके कार्यक्षेत्र में आने वाले सभी पोस्ट ऑफिस, पासपोर्ट सेवा केंद्र (पीओपीएसके) को खोलकर 1400 आवेदकों के पासपोर्ट आवेदन पत्र स्वीकार किए जाएंगे।

पासपोर्ट अधिकारी शैलेंद्र सिंह ने बताया कि इस विशेष ड्राइव के लिए 1400 ऑनलाइन अपॉइंटमेंट जारी किए गए हैं। इनमें पासपोर्ट सेवा केंद्र के लिए 800 अपॉइंटमेंट निर्धारित हैं। पीओपीएसके बिजनौर, मुरादाबाद, पीलीभीत, रामपुर और नगीना में 90-90 अपॉइंटमेंट्स, अमरोहा, बदायूं और शाहजहांपुर में 50-50 अपॉइंटमेंट जारी किए गए हैं।

सभी अपॉइंटमेंट वेबसाइट www. passportindia. gov.in पर उपलब्ध करा दिए गए हैं। पासपोर्ट बनवाने के इच्छुक आवेदक ऑनलाइन अपॉइंटमेंट बुक कर इस सुविधा का लाभ उठा सकते हैं। इसी दिन राजभाषा हिंदी को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से कार्यालय के सभागार में हिंदी कार्यशाला का आयोजन भी किया जाएगा।

ईमेल आईडी में किया गया है परिवर्तन

क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, बरेली की ईमेल आईडी में परिवर्तन किया गया है। अब पूर्व की ईमेल आईडी rpo.bareilly@mea.gov.in के स्थान पर नई ईमेल आईडी rpo.bareilly@cpo.gov.in प्रभावी होगी।

स्वच्छता पखवाड़ा 2026 का किया गया आयोजन

आईटीबीपी बैंड के साथ निकाली गई पदयात्रा

bareilly@inext.co.in

BAREILLY (22 Jan): पासपोर्ट कार्यालय में बरेली की स्वच्छता पखवाड़ा 2026 का आयोजन किया गया...

कलाकारों ने भी बिखेरा जलवा

शनिवार को विशेष अभियान में बनेंगे 1400 पासपोर्ट

- क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय की ई-मेल आइडी में किया बदलाव
- आनलाइन अपाइंटमेंट जारी किए गए है

जागरण संवाददाता, बरेली : पासपोर्ट बनवाने के लिए आवेदकों की बढ़ती संख्या को देखते हुए पासपोर्ट कार्यालय की ओर से शनिवार 21 फरवरी को विशेष अभियान चलाया जाएगा। क्षेत्रीय मुख्यालय समेत जिला स्तरीय केंद्रों पर 1,400 आवेदकों के पासपोर्ट बनवाने की प्रक्रिया एक दिन में पूर्ण कराई जाएगी। इसके लिए आनलाइन अप्वाइंटमेंट जारी कर दिए गए हैं।

क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी शैलेंद्र सिंह ने बताया कि पासपोर्ट बनवाने के लिए आवेदकों की संख्या बढ़ी है। अधिक से अधिक लोगों को यह सुविधा उपलब्ध कराने के लिए 21 फरवरी को अवकाश के दिन भी कार्यालय और पासपोर्ट सेवा केंद्रों को खोलकर लोगों के पासपोर्ट बनवाए जाएंगे। बरेली के पासपोर्ट सेवा केंद्र के लिए 800 अप्वाइंटमेंट, पासपोर्ट सेवा केंद्र बिजनौर, मुरादाबाद, रामपुर, पीलीभीत के लिए 90-90 अप्वाइंटमेंट, नगीना, अमरोहा, बदायूं, शाहजहांपुर पासपोर्ट सेवा केंद्रों के लिए 50-50 अप्वाइंटमेंट जारी किए गए हैं। उन्होंने आवेदकों को सुझाव दिया है कि विभाग के वेबसाइट www.passportindia.gov.in पर अपना आनलाइन अप्वाइंटमेंट बुक करा सकते हैं।

हिंदी को बढ़ावा देने के लिए होगी कार्यशाला : राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने के लिए 21 फरवरी को ही क्षेत्रीय कार्यालय सभागार में हिंदी कार्यशाला होगी। उन्होंने विभाग के अधिकारी, कर्मचारियों से कार्यशाला में प्रतिभाग करने का आग्रह किया है। उन्होंने बताया कि क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय की ई-मेल आइडी बदल गई है। ई-मेल rpo.bareilly@cpo.gov.in पर अपनी शिकायत करने और कोई दस्तावेज भेजने के लिए उपयोग किया जा सकता है।

आंवला में कल से 11 दिसंबर तक रहेगी पासपोर्ट मोबाइल वैन

बरेली। क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय की पासपोर्ट मोबाइल वैन नौ, 10 और 11 दिसंबर को इफको टाउनशिप, पोस्ट परिसर नगर, आंवला में पहुंचेगी। तीन दिनों तक यह मोबाइल वैन पासपोर्ट से संबंधित सेवाएं उपलब्ध कराएगी। क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी शैलेंद्र कुमार सिंह ने बताया कि इसके लिए 40 ऑनलाइन अपॉइंटमेंट पासपोर्ट सेवा की आधिकारिक वेबसाइट passportindia.gov.in पर जारी कर दिए गए हैं। आंवला और आसपास के क्षेत्रों के नागरिक, जो पासपोर्ट बनवाने या नवीनीकरण करवाने के इच्छुक हैं, वे समय रहते ऑनलाइन अपॉइंटमेंट बुक कर सकते हैं।

निस्तारण

सौ से अधिक आवेदकों ने साझा कीं समस्याएं, अवकाश के बावजूद खुले रहे पीओपीएसके

पासपोर्ट अदालत में महीनों से अटके मामलों का हुआ समाधान

संवाद न्यूज एजेंसी

पासपोर्ट अदालत में अपनी समस्या लेकर पहुंचे लोग। अमर उजाला

आवश्यक दस्तावेज की थी कमी

स्वच्छोत्सव में आयोजित निबंध प्रतियोगिता के छायाचित्र

पासपोर्ट कार्यालय में आयोजित स्वास्थ्य शिविर के छायाचित्र

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के छायाचित्र

पांचाल

षष्ठम अंक (वर्ष 2026)

पत्रिका प्रकाशन समिति

कौशल सिंह (सदस्य)	दिनेश सिंह (सम्पादक)	शैलेन्द्र सिंह (संरक्षक)	मिथुन कुमार (सदस्य)	तुषार पाठक (सदस्य)

150 साल वंदे मातरम

भारत की जांबाज़ बेटियां व कुछ अहम फैसले

बरेली के कुछ प्रमुख स्थानों की झलक

रामायण वाटिका

पांडवों द्वारा स्थापित भगवान शंकर के सात प्राचीन मंदिर

पांचाल किले की प्रतिकृति

सत्यमेव जयते

भारत सरकार

विदेश मंत्रालय

क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, बरेली

बी.डी.ए. कॉम्प्लेक्स, पुराना पीलीभीत रोड, प्रियदर्शिनी नगर, बरेली - 243122